नेवला २

अब होगा इन्साफ..

वेदव्यास मिश्र

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Vedvyas Mishra 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-348-5

Cover Design: Deepak Katheria
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: May 2026

उपन्यास के बारे में जानकारी..

प्रस्तुत उपन्यास “नेवला 2 अब होगा इन्साफ़.. “में उपन्यासकार वेदव्यास मिश्र ने “नेवला “यानि मंगूस मामा की कहानी को एक नये अंदाज में आगे बढ़ाया है ।

आपने इसके पहले भाग “नेवला “में ये पढ़ा और जाना कि खूंखार अपराधी मंगूस मामा को लोअर कोर्ट से फाँसी की सजा का आदेश हो चुका है जिसे अपर कोर्ट में चुनौती देने के लिए मात्र पन्द्रह दिन का मोहलत दिया गया है ।

इस “नेवला-2 “में ये देखना दिलचस्प होगा कि..आगे आखिर होता है क्या ??

इन्सपेक्टर हुसैन, मंगूस मामा की बेटी नेहा और तेजतर्रार वकील इन्दु भटनागर की तिगड़ी का कमाल देखते ही बनता है उपन्यास के इस भाग में । इतना तय है,पाठक वर्ग को बहुत ही मजा आने वाला है ।

एक शानदार संदेश दिया गया है इस उपन्यास में कि

असत्य का अंधेरा कितना भी घना क्यों न हो मगर जीत तो अंतत: सूरज रुपी सत्य की सुनहरी किरणों का ही होता है ।

यह उपन्यास सभी उम्र के पाठकों के लिए निश्चित ही पढ़ने योग्य है ।

उपन्यासकार के बारे में जानकारी..

ऑथर वेदव्यास मिश्र की लगभग 12,000 से अधिक मीनिंगफूल, हर उम्र की व सभी रस की कविताएँ और कई कहानियाँ फेसबुक पेज पर उपलब्ध हैं।

इनकी प्रशंसित कहानियों में "अमरबेल ", "सॉरी मम्मी... सॉरी पापा ", "इश्क़ की परछाई "व "अजब प्रेम की गज़ब कहानी "विशेष उल्लेखनीय है। अमर उजाला काव्य में इनकी 450 से अधिक रचनाएँ वर्तमान में प्रकाशित हैं व लिखन्तु डॉ ट कॉ म पर भी ये बहुत ज्यादा सक्रिय हैं।

इनके द्वारा लिखे हुए 200 से अधिक सुपरहिट चुनिन्दा गीत,यूट्यूब पर उपलब्ध हैं जिसमें हिन्दी,छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी गीत खुद ऑथर की आवाज़ में उल्लेखनीय हैं !

"तोर मया पीरित के बंधना मा "छत्तीसगढ़ी में इनका लिखा व गाया गया सुपरहिट व लोकप्रिय गीत है !!

इनके द्वारा लिखी व प्रशंसित पहली पुस्तक "द फ्लॉवर ऑफ वर्ड (हिन्दी) "के बाद इनका पहला उपन्यास "नेवला "के बाद यह भाग "नेवला 2 अब होगा इन्साफ़.. "निश्चित ही पढ़ने योग्य व संदेशपरक है ।

विज्ञान विषय से स्नातक एवं हिन्दी विषय में स्नातकोत्तर होने की वजह से यथार्थ और कल्पनाशीलता का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है इनकी रचनाओं में !!

इनके कलम की सबसे बड़ी खासियत है..ये जो भी लिखते हैं,पूरी तरह निर्भीक होकर व बेबाकी से लिखते हैं !!

वर्तमान में ये अभी मिडिल स्कूल में प्रधानपाठक के पद

पर कार्यरत हैं !!

मैं राखी मिश्रा, इनकी जीवन संगिनी होने के नाते इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ !!

Address
Post- Malkharoda, Distt.- Sakti
Pin-495691 mob. 9009356942

दो शब्द
उपन्यासकार की कलम से..

प्रस्तुत उपन्यास "नेवला 2 अब होगा इन्साफ़.. "आपके हाथों में सौंपकर मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है।

इस उपन्यास में "नेवला "के बाद की कहानी को बहुत ही प्रभावी ढंग से बताया गया है ।

"नेवला "में मंगूस मामा को फाँसी की सजा सुनाई जा चुकी है लोअर कोर्ट द्वारा..जिस फैसले को अपर कोर्ट में चुनौती देने के लिए पन्द्रह दिन का मोहलत दिया गया है ।

इस नेवला 2 को आज प्रस्तुत करते हुए मैं अपने घर के सभी दिवंगत दिव्यात्माओं के साथ ही साथ देश के सभी शहीद सैनिकों को यह उपन्यास सादर समर्पित करता हूँ व नमन करता हूँ !!

मेरी मंशा है,इस उपन्यास को हायर सेकंडरी स्कूल व कॉलेज के स्टूडेंट्स जरूर पढ़ें ताकि नई पीढ़ी के मन-मस्तिष्क पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़े ।

यह उपन्यास "नेवला2 अब होगा इन्साफ़.. "देश के सभी सैनिकों को व शिक्षा विभाग को समर्पित है !

आशा है ..गद्य, पद्य व आलेख पर आधारित मेरी पहली पुस्तक "द फ्लॉवर ऑफ वर्ड "आपको अवश्य पसंद आया होगा !

मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि ये उपन्यास “नेवला 2 अब होगा इन्साफ़.. “आप सभी को अवश्य पसंद आयेगा।

इसके बाद बहुत जल्द मेरा नया उपन्यास “प्रेम देवी “आने वाला है जो पुनर्जन्म की घटना पर आधारित है । ये उपन्यास रहस्य-रोमांच की एक अलग ही दुनिया में सैर करायेगी आप सभी को !!

आपके अनमोल सुझावों की प्रतीक्षा में !!

- वेदव्यास मिश्र (उपन्यासकार)
(मोबा.नं.- 9009356942)

Disclaimer

इस उपन्यास "नेवला 2 अब होगा इन्साफ़..के सभी पात्र पूरी तरह काल्पनिक हैं ।

उपन्यास "नेवला "के इस अगले भाग को सजीव बनाने के लिए मात्र प्रतीकात्मक ढंग से पात्रों का चयन किया गया है, जिसका उद्देश्य मात्र मनोरंजन है !

साथ ही साथ देशहित में सकारात्मक संदेश देना भी इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है।

उपन्यास के किसी भी अंश से अगर किसी की भावनाओं को ज़रा सी भी ठेस पहुँचती है तो इसके लिए उपन्यासकार माफी चाहता है !

इस उपन्यास में कहीं पर भी, कोई बात..किसी घटना अथवा व्यक्ति से मिलती-जुलती हुई प्रतीत होती हो तो इसे मात्र संयोग समझा जावे !!

🙏🙏

उपन्यास – नेवला
उपन्यासकार - वेदव्यास मिश्र

नेवला 2 अब होगा इंसाफ..
अभी तक “नेवला “में आपने पढ़ा ..

मंगूस मामा को लोअर कोर्ट से फाँसी की सजा हो चुकी है। लोअर कोर्ट के द्वारा उसे अपर कोर्ट में अपील के लिए मात्र 15 दिन की मोहलत दी गई है।

मंगूस मामा यानि बल्लू के बचपन का प्रेम “इशिका “इस दुनिया को छोड़कर जा चुकी है लेकिन इशिका को आत्महत्या के लिए मजबूर करने वाले चारो क़ातिल मंगूस मामा के हाथों मारे जा चुके हैं।

मंगूस मामा इन्तज़ार कर रहा था टाइगर करोड़ी यानि एक्स का जो विदेश गया हुआ था !

अपना टार्गेट पूरा करने में मंगूस मामा को एक हजार में सिर्फ दो सैनिकों की कमी रह गई थी ,फिर उसे टाइगर करोड़ी के जाल से मुक्ति मिल जाती।

फिर वह आजाद हो जाता इस टाइगर करोड़ी वाले जंगल के कानून से।

मगर दुर्भाग्य कि उसे अपनी बिटिया इन्सपेक्टर नेहा के आग्रह को टालना मुश्किल हो गया था और अंतत: सरेन्डर करना ही पड़ा।

उसे अब तक के उसके द्वारा किये गये निर्दोष सैनिकों के मौत से बहुत ज्यादा पछतावा भी था।

वह अदालत में फाँसी के सजा की माँग भी कर चुका था, उसकी बेटी नेहा के वकील भटनागर द्वारा मना करने के बावजूद ।

सरेन्डर के समय नज़रें चुराकर साउथ सटकेला स्कूल की पीछे वाली दीवार फाँदकर भाग चुका था ।

साउथ सटकेला, टाइगर करोड़ी की मौत के बाद जंगल राज का मुखिया बन चुका था ।

टाइगर करोड़ी ने मरने से पहले एक

लिफाफा सौंपा था सटकेला को जिसे मंगूस मामा को सौंपना था जेल में मिलकर ।

टाइगर करोड़ी ने सटकेला को आदेश दिया था कि एक बार जेल जाकर वह मंगूस मामा को बतायेगा कि अब उसका टार्गेट पूरा मान लिया गया है ।

टाइगर करोड़ी के आदेशानुसार सटकेला ,मंगूस मामा को लिफाफा सौंपने के दो दिन बाद पुन: मिलेगा . फिर पूछेगा कि आगे क्या करना है ।

अगर वो जेल से आजाद होना चाहता है तो बस एक बार वो अपनी सहमति दे दे ..हम जेल की दीवार तोड़कर उसे बाहर निकाल

लेंगे !

टाइगर ने सटकेला को बोला था कि मंगूस मामा को बता देना कि टाइगर करोड़ी को मंगूस मामा के हर पल की खबर है और टाइगर करोड़ी अपने जुबान का पक्का है..

जो बोल दिया सो बोल दिया !

टाइगर करोड़ी हमेशा एक बात बोलता है-- "टाइगर करोड़ी ,कमिटमेंट का दूसरा नाम है । "

टाइगर करोड़ी ,सटकेला को जेल भेज पाता मंगूस मामा के पास..उसके पहले ही वो एक मुठभेड़ में मारा जा चुका था ।

सटकेला पूरी जिम्मेदारी और स्वामी-भक्ति

के साथ भेष बदलकर एक ग्रामीण सरदार की वेशभूषा में मंगूस मामा से मिलने पहुँच चुका था आज जेल ।

अब पढ़िये आगे....

🙏☕☕🙏

--- ✍️ -----✍️ -----

मामा, मेरे को पहचाना ..मैं साउथ सटकेला ..तुम्हारा राइट हैन्ड ..सरेन्डर के दिन जो भी गुस्से से बोला मैं..मेरे को माफ करने का !

मामा..तेरे को मालूम, टाइगर करोड़ी मारा जा चुका है लेकिन मरने से पहले उसने दो काम किया..मेरे को जंगल का राजा बना

दिया और दूसरा एक लिफाफा सौंपा है तेरे को देने का ।

ये लिफाफा मैं सौंपता हूँ तुमको ! मैं दो दिन के बाद फिर आयेगा तेरे से मिलने को..

ये टाइगर करोड़ी ने बोला था मेरे को मरने से पहले...तू अपने को बस इतना जरूर बता देना कि आजाद होना चाहता है कि

चुपचाप जेल के फाँसी में लटकने का..या अपुन लोगों को जेल का दीवार तोड़ने का...बताना जरूर !

मिलने का समय पूरा होते ही पुलिस द्वारा सटकेला को ...जाने का इशारा किया जाता है ।

इन्सपेक्टर नेहा को, उसके द्वारा किये गये काबिलेतारीफ काम के लिए विभाग द्वारा मेडल दिया जाता है और प्रमोशन भी क्योंकि मंगूस मामा जैसे खूंखार अपराधी और अपने ही पापा को फाँसी के तख्ते तक पहुँचाना बहुत बड़े मिसाल की बात है ।

नेहा को दिलोजान से चाहने वाला उसका दोस्त इन्सपेक्टर हुसैन हमेशा ही उसका हौसला बढ़ाता है मगर वह महसूस करता है कि नेहा अन्दर से कहीं न कहीं दुखी है।

हो भी क्यों न .. मंगूस मामा बेशक नफ़रत के लायक है मगर है तो वह पापा ही ।

इन्सपेक्टर हुसैन उसे दिलासा देते हुए कहता है..देखो नेहा..तुम्हारे पापा ने जो भी नरसंहार किये हैं..वो भोले-भाले सैनिकों के किये हैं..न जाने कितने पुलिस उसके शिकार हुए हैं !

नौ सौ अट्ठान्वे जाबांजों के खून से तो सने ही हैं उसके हाथ...और उन सभी जाबांजो के परिवार..जो अपराध मंगूस मामा ने किये हैं ..उसके हिसाब से तो उसे हजार बार फाँसी की सजा मिलनी चाहिए..एक बार फाँसी की सजा तो बहुत ही कम है।

नेहा अपने आँसू को पोंछने का असफल प्रयास करती मगर कर भी क्या सकती थी !

बस उसने इतना ही कहा - तुम नहीं समझ पाओगे अनवर एक बेटी के दिल के हालात और जज्बात...!!

मैं सब समझता हूँ नेहा ..मुझे याद है ..मेरे सामने ही दंगे की आड़ में मेरे पूरे परिवार को मार दिया गया था।

मुझे बच्चा समझकर छोड़ दिया था दंगाइयों ने ..बस इतना ही अहसान किया था मेरे ऊपर ।

ऐसे ही एनकाउन्टर स्पेशलिस्ट का तमगा नहीं लगा है मेरे ऊपर ।

मैं जब भी किसी अपराधी को देखता हूँ

जिसे कानून का जरा सा भी डर नहीं है बल्कि वो मंहगा वकील कर छूट जाता है तो मेरा खून खौल जाता है..फिर मेरे हाथ से एनकाउंटर कब होता है..मुझे खुद ही पता नहीं चलता ।

कुछ पल के लिए मेरे सामने घटित वो बचपन की घटना एक धुंध की तरह छा जाती है ।

अगर मेरा बस चलता तो सारे दंगाइयों और अपराधियों को एक लाइन में खड़े करके गोलियों से भून देता ।

ताकि हमारा समाज पूरी तरह अपराध मुक्त हो जाता ।

न कोई जेल और न ही कोई बेल..सीधे एनकाउंटर ।

एनकाउंटर नम्बर 502 जानते हो ..कौन था..??

टाइगर करोड़ी..।

अगर उसे जिन्दा छोड़ता और कानून के हवाले करता तो, वो मंहगा वकील करके छूट जाता जमानत में, एक-दो हफ्ते में ही ।

वो फिर से न जाने कितने बेबस लोगों का खून पीता ।

जैसे ही मैंने ड्रामा किया जंगल के बीच पेशाब करने का..वो भागने लगा ।

बस ,यही तो मौका चाहिए था मुझे ..जिसे जानबूझकर दिया था उसे मैंने ।

एक अजीब सी बात महसूस किया था मैंने उस दिन ..टाइगर करोड़ी ने मरते-मरते एक बात कही थी मुझे..मेरा एक अधूरा काम रह गया जिसे पूरा करेगा मेरा शेरा।

मैं कुछ और पूछता कि उसने दम तोड़ दिया था ।

बार-बार यही सोच रहा हूँ कि ये शेरा कौन है और उसका अधूरा काम कौन सा है ।

हजारों बेगुनाह और निर्दोष लोगों की जान लेने के बाद भी कौन सा काम अधूरा रह जाता है ऐसे जल्लादों का ?

समझ नहीं आता ..इतना नफ़रत लेकर इन्सान जिन्दा कैसे रहता है ।

कहीं अमीरी-गरीबी,कहीं जात-पांत,कहीं ऑनर किलिंग के नाम पर ,कहीं धर्म के नाम पर तो कभी गन्दी आत्मसंतुष्टि के लिए न जाने कितने लाचार और बेबस लोगों को मार दिया जाता है हर दिन ..हर साल ।

बुरी है आदमी की नीयत मगर बदनाम होता है उसका मज़हब ।

जिसे देखो,वही खून का प्यासा है आजकल..पता नहीं,समाज को ये किस नये नशे की लत लग गई है ।

मुझे याद आता है जब एक बार मेले में कुछ आवारा लड़के गोलाई बनाकर बारी-बारी से

एक लड़की को छेड़ रहे थे ।

उन्होंने धीरे-धीरे उसे लगभग नंगा ही कर डाला था । ये सब मेरे सामने ही हो रहा था ।

मैंने जब ये नजारा देखा तो मुझसे रहा नहीं गया..लगभग सत्रह-अठारह की उम्र में मेरे अन्दर इतनी फुर्ती थी कि मैं उस लड़की का हाथ पकड़ा और उसे उन आवारा लड़को के चंगुल से छुड़ाकर बाहर लाया और उसे एक सुरक्षित जगह पर बिठा दिया !

वे थोड़ी देर बाद मेरे पास आये और मुझे लात-घूँसों से मारना शुरू कर दिये।

पुलिस आई और मुझ पर मजहबी रंग देकर अन्दर करना चाहा तो उस लड़की ने बयान

दिया कि इस लड़के ने ही तो मुझे बचाया है, आप उन आवारा लड़को को अन्दर करिये ।

मुझे तो छोड़ दिया उन लोगों ने मगर रिपोर्ट लिखवाने के नाम पर थाने में ही बिठा लिया उस लड़की को पुलिस वालों ने ।

पाँच दिन के बाद उस लड़की की लाश एक सुनसान जगह में मिली थी।

मुझे आज तक समझ नहीं आया कि आखिर किसने कत्ल किया होगा उस लड़की का।

डॉक्टर की टीम ने निष्पक्ष होकर अपने हेड ऑफ डिपार्टमेंट को रिपोर्ट भी सौंप दिया

था कि उसका अप्राकृतिक बलात्कार भी हुआ है मगर रिपोर्ट को ऊपरी दबाव के चलते दबा दिया गया ..रिपोर्ट के साथ फिर से ,एक बार और कानूनी बलात्कार हुआ..फिर क्या, उसे ठंडे बस्ते में ही डाल दिया गया।

वह बहुत ही गरीब परिवार से थी ! उस गरीब लड़की का केस लड़ते-लड़ते उसका पूरा परिवार चौपट हो गया मगर उन्हें न्याय नहीं मिला ।

ऐसे केस को स्वत: संज्ञान लेकर कोर्ट को रिओपेन करना चाहिए एवं अपराधियों को उनके सही अंजाम तक शीघ्रतिशीघ्र पहुँचाना चाहिए।

खून खौलता है नेहा मगर क्या करें ..सच तो यही है कि हम भी कहीं न कहीं बेबस हैं..क़ानून से बंधे हुए हैं ।

तुम्हारे पापा के बारे में पता चला कि वे देश के प्रति कितने जिम्मेदार कमांडो रह चुके हैं लेकिन उनके साथ इतनी ज्यादती हुई कि उन्हें मजबूरी में अपने ही लोगों के खिलाफ हथियार उठाना पड़ गया और आज फाँसी के फंदे पर झूलने वाले हैं।

वैसे अपर कोर्ट में, अपने पापा के बचाव पक्ष में केस तुमने फाइल किया या नहीं..फैसला जो भी आये..मगर तुम्हें केस तो फाइल करनी ही चाहिए।

कौन जाने, असली अपराधी कोई और लोग ही हों जिनके चेहरे बेनकाब हो सकते हैं ।

अधिकतर असली अपराधी कुछ लोगों की आड़ में छुपे रहते हैं।

वैसे भी लोअर कोर्ट ने समय बहुत कम दिया है।

अनवर ने नेहा को ढांढस बँधाते हुए आश्वस्त किया कि चिन्ता मत करो..जो भी होगा सब अच्छा ही होगा।

🌍

रात का खाना खाने के बाद मंगूस मामा ने लिफाफा खोला..खोलते ही उसने टाइगर का लिखा पत्र पढ़ना शुरू किया।

पत्र में लिखा था..

मिस्टर बलवंत,

तुम आखिरकार एक छोटी सी लापरवाही से कानून के शिकंजे में आ ही गये..तुम्हें अपनी बेटी की बातों में नहीं आना चाहिए था ।

हमारे लाइफ में भावनाओं का कोई स्थान ही नहीं है । हमारा एक ही उसूल है - "मरो या मारो । "

मेरे लिए तुम्हारा कानून के शिकंजे में होना व्यक्तिगत रूप से बहुत ही नुकसान वाली बात लग रही है ।

वैसे तो तुम्हारे दार्गेट पूरा होने में दो उँगली कम है मगर कोई बात नहीं..तुम्हारा टार्गेट हमारे तरफ से पूरा ही समझो ।

एक बात के लिए माफी चाहता हूँ..जिन चार लोगों को तुमने मारा है वो बहुत ही छोटे किलर थे और एक प्रकार से डमी किलर थे ।

ये जानकर तुम शॉक्ड हो जाओगे और नाराज भी होओगे मेरे ऊपर..मगर क्या करूँ..

इतना कमीनापन तो बनता है । कमीना हूँ मगर ..काम का आदमी हूँ ।

कहने का मतलब है..जिन चार लोगों को तुमने मारा है वो इशिका के असली अपराधी नहीं हैं ।

असली अपराधी तो अभी भी जिन्दा हैं !

दरअसल वो चार डमी लोगों को मरवाकर

मैं ये चेक करना चाह रहा था कि कहीं तेरे अन्दर की देशभक्ति फिर से न जग जाये और कहीं तू सरेन्डर न कर दे कानून के सामने ।

डर था मेझे कि तेरे देशभक्ति के चक्कर में हम कहीं मारे न जायें या पकड़े न जायें..

मैंने कहा ना..कमीना हूँ पर काम का आदमी हूँ ।

तुम्हें हौसला भी देना था मुझे और टार्गेट भी पूरा करवाना था तुमसे ।

लेकिन अब वादे और मेरे कमिटमेंट के मुताबिक तुम्हारी प्रेमिका इशिका के चारों ओरिजनल अपराधियों के नाम बताना अब मैं अपना फर्ज समझता हूँ ।

इस बार मेरे तरफ से कोई धोखा नहीं..इसलिए भी..कहीं किसी दिन मुठभेड़ में मैं मारा न जाऊँ तो एक नेक काम मेरे तरफ से..और वो भी खास सिर्फ तुम्हारे लिए । स्पेशल गिफ्ट फॉर यू ..तो प्लीज रीड केयरफूली नाउ..

उनके नाम हैं - जज रमेश डोंगरे, इन्सपेक्टर राज शेखर, एडव्होकेट रतन सिंघानिया और एजुकेशन मिनिस्टर मदन सिंह जो रेपिस्ट रहे हैं मगर सबूतों के अभाव में सब के सब छूट गया थे ।

जिसने इशिका को और पूरे परिवार को ,उनके खाने में जहर मिलाकर मरवा दिया था ।

पुलिस समझी कि पूरा का पूरा परिवार अपनी इज्जत की परवाह करते हुए सामूहिक सुसाइड कर लिया था ।

एक शिक्षक ने गवाही देना भी चाहा तो वह एक एक्सीडेंट में मारा गया ।

ताज्जुब है..आज के जमाने में विलेन ही हीरो है और हीरो, लाचार है..बेबस है या मजबूर ।

अब फैसला तुम्हारे हाथ में है ..यानि अब फैसला तुम्हें करना है..इन चारों अपराधियों को तुम मारोगे या ये काम हमारे जिम्मे छोड़ते हो। हमारे लिए तो ये काम बस दो मिनट का है ।

सटकेला को तुम्हारी अनुपस्थिति में जंगल का राजा बना दिया है अभी मैंने ।

ये तुम्हारे पास जायेगा मिलने और ये लिफाफा सौंपेगा तुम्हें ..याद रहे, जेल की दीवारों को तोड़कर तुम्हें बाहर निकालना हमारे लिए चुटकियों का काम है !

विश्वास रखो..तुम जैसा चाहोगे..वैसा ही होगा !

अगर बाहर नहीं आना चाहोगे तो फाँसी के पहले उन चारों अपराधियों का मरा हुआ चेहरा तुम तक अवश्य पहुँचा दिया जायेगा मेरे द्वारा.. क्योंकि कमीना हूँ मगर कमिटमेंट का दूसरा नाम भी तो हूँ ।

अपने इस कमीने दोस्त "एक्स "पर भरोसा

जरूर बनाये रखना ।

ये न भूलो..इशिका सिर्फ तुम्हारी ही मोहब्बत नहीं थी..वो मेरी भी मोहब्बत थी..मैं उसे दिलोजान से चाहता था मगर तुम्हारी अटूट चाहत के आगे मैंने सरेन्डर कर दिया था ।

उन चारों कुत्तों को मारना मेरे लिए बहुत ही मामूली सी बात है मगर दोस्ती की खातिर ये अधिकार मैं सिर्फ तुम्हारे लिए सुरक्षित रखता हूँ।

बताना जरूर ..जो भी फैसला हो तुम्हारा..चाहे जंगल में मरो या फाँसी से मरो मगर मरो तो इत्मीनान से मरो !

हम यारों के यार हैं और दुश्मनों के दुश्मन।

लिफाफा सौंपने के दो दिन बाद सटकेला फिर से जायेगा तुमसे मिलने..क्योंकि पहले इत्मीनान से मेरा ये लेटर पढ़ लो और समझ लो मेरी बातो को ..फिर सटकेला को फाइनली बता देना कि आखिरकार करना क्या है।

अगर बाहर आना चाहो तो फिर से स्वागत है तुम्हारा । सटकेला तुम्हारा राइट हैंड होगा और तू होगा, पाँच स्टेट का मुखिया यानि.. तू मेरी जगह ले लेगा जेल से निकलने के बाद।

तुम्हारे फेवर में बस एक ही एडवाइज है प्यारे..मरना ही है तो उन चारों कातिलों को

अपने हाथों से मारकर मरो।

तुम्हारे जवाब की प्रतीक्षा में अभी भी -

टाइगर करोड़ी

टाइगर करोड़ी का ये लेटर पढ़कर परेशान हो गया था मंगूस मामा ।

अब अपर कोर्ट में अपना पक्ष रखने के लिए मात्र 12 दिन ही शेष रह गये थे ।

उसे समझ नहीं आ रहा था कि आखिर वो करे भी तो क्या करे।

नेहा जब उससे मिलने आई तो वह भावुक हो गया था ।

वह रोते हुए अपनी बेटी को बोलता है -

आदमी को अपराध के रास्ते पर कभी भी नहीं चलना चाहिए । मेरा पूरा जीवन बर्बाद हो गया..घर-परिवार सब चौपट हो गया ।

आज कंगाल हो चुका हूँ रिश्तों के नाम पर । चाहकर भी मैं तुम्हें गले लगाकर रो भी नहीं सकता ।

बेटा,मेरे जाने के बाद एक काम जरूर करना..कोई अच्छा सा लड़का देखकर शादी कर लेना..मेरी आत्मा को शान्ति भी मिलेगी और तसल्ली भी ।

नेहा भी रोने लगी मगर पापा को ढांढस बंधाया और कहा- मैं आपको फाँसी होने दूँ..तब ना !!

------------🌎🌍----------

ये बातें हो ही रही थी कि तभी एक महिला मंगूस मामा से मिलने आई...बाल लगभग पककर सफेद हो गये थे पूरी तरह..चलने के अंदाज से लग रहा था कि उसके घुटनों में बहुत ज्यादा तकलीफ है ।

नेहा को इत्मीनान से देखा उसने । नेहा के जाते ही मंगूस मामा को बड़ी ही धीमी आवाज में उसने कहा- बल्लू..मैं तुम्हारी माँ गोदावरी देवी !!

ये जो लड़की गई अभी ..ये कौन है बेटा..चेहरा हुबहू तेरे से मिल रहा है..कहीं ये तेरी बेटी तो नहीं।

मंगूस ने हाँ में सिर हिलाया और रोने लगा ।

माँ गोदावरी देवी ने कहा- मैं उसे गले लगाकर आशीर्वाद नहीं दे पाई । अगली बार वो तुझसे मिलने आये तो मेरे बारे में उसे जरूर बताना बेटा।

और हाँ, इशिका के बारे में सुनकर मुझे बहुत दुख लगा बेटा ।

मेरी ज़िन्दगी नर्क हो गई है ..वो आदमी नहीं है..राक्षस है राक्षस..बहुत धूर्त, चालाक और कमीना आदमी ।

हम लोगों की हँसती-खेलती ज़िन्दगी देखते ही देखते चौपट हो गई मेरे बेटे । तुम्हारी पढ़ाई चौपट न हो ये सोचकर मुझे कम्प्रोमाइज करना पड़ा !!

करती भी क्या बेटा..एक नारी को इस

संकीर्ण मानसिकता वाले समाज में इज्जत बचाने के लिए कभी-कभी अपनी इज्जत का ही सौदा करना पड़ता है क्योंकि उसके पास कम्प्रोमाइज करने के लिए सबसे कीमती गहना ,अपनी इज्जत को ही गिरवी रखना पड़ता है क्योंकि गिरवी रखने के लिए इज्जत ही होता है सिर्फ उसके पास ।

उस राक्षस को सजा दिये बिना फाँसी के फंदे पर नहीं चढ़ेगा तू ।

हमारे एरिया में ... एक नेकदिल इन्सपेक्टर आया है बेटा..जब मैं शिकायत लेकर गई थाने तो वहाँ तेरा पोस्टर छपा देखा ।

मेरी नज़रें तुझे देखते ही पहचान गईं..वहीं

से मुझे पता चला कि तुझे फाँसी होने वाली है और तू यहाँ बंद है ।

तू फरार हो सकता है इसलिए सभी पुलिस चौकी को पहले ही सतर्क कर दिया गया है ।

गोदावरी देवी जैसे ही गईं, मंगूस मामा बहुत देर तक छत की ओर घूरता रहा। तभी मुलाक़ात के लिए वकील इंदु भटनागर आई।

इंदु जैसे ही कुर्सी पर बैठी, हंसकर बोली —

"अरे मामा जी! ये क्या हाल बना रखा है?

कुछ लेते क्यों नहीं ।

चेहरे से तो ऐसा लग रहा है मानो आलू के पराठे आपको हजम न हुए हों! "

मंगूस मामा हल्की मुस्कान दबा न पाया —

"इंदु, तुम्हें हमेशा मज़ाक ही सूझता है। मुझे तो लगता है कोर्टरूम में भी तुम जज को हंसा-हंसा के बरी करा दोगी मुझे। "

इंदु ने आंख मारी —

"जज को हंसाना आसान है मामा, मगर तुम्हारे किए कांड को समझाना मुश्किल।

998 जवानों का हिसाब... और ऊपर से तुम्हारा खुद फाँसी की सजा माँगना ।

ये कैसा 'क्लाइंट' है भला? बाकी तो वकील को फीस देकर जान छुड़ाते हैं, और एक तुम हो — फीस देकर भी मरने पर तुले हो! "

नेहा बगल में खड़ी थी। पहली बार उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आई।

"इंदु दीदी, आप ही समझाइये न इन्हें... ये

बार-बार वही गलती दोहरा रहे हैं। फाँसी की ज़िद पकड़े बैठे हैं। "

इंदु ने मामा की ओर उंगली उठाई —

"सुनो बलवंत मामा! अभी अपर कोर्ट का केस बाकी है। तुम इतने बड़े टाइगरों से भिड़े हो, ये छोटी बात है क्या?

और ये जो नया टाइगर का लिफाफा आया है... उसमें नाम बड़े-बड़े हैं — जज, इन्सपेक्टर, एडवोकेट, मिनिस्टर, ... अगर इनका सच सामने आ गया तो आधी राजनीति हिल जाएगी। "

मामा गंभीर हो गया ।

"इंदु, क्या सच में इन बड़े लोगों के खिलाफ़

लड़ाई मुमकिन है?

मेरा मन तो कहता है मैं जेल में ही खत्म हो जाऊँ। "

इंदु ने तुरंत ताली बजाई और बोलीं —

"वाह! क्या डायलॉग मारा है आपने!

'मैं खत्म हो जाऊँ...' अरे मामा, ये डायलॉग फिल्मों में चलता है, अदालत में नहीं।

अदालत में पेपर चलता है, सबूत चलता है... और हाँ, थोड़ी-बहुत इंदु की चालाकी भी चलती है। "

नेहा अब सच में हँस पड़ी। पहली बार इतने दिनों में उसके चेहरे पर राहत दिखी।

इंदु ने धीरे से कहा —

"देखो, मैं केस को सिर्फ़ कानून से नहीं, दिमाग़ और ह्यूमर से भी लड़ती हूँ।

ऊपर से तुम्हारे पास अब टाइगर करोड़ी का वो लेटर है, जिसमें बड़े-बड़े नाम एक्सपोज़ हैं।

ये टाइगर करोड़ी..साला..जाते-जाते एक अच्छा काम कर गया जो ये लिफाफा छोड़ गया ..क्योंकि यही लिफाफा बचायेगा तेरे को मामा ।

अगर फिर भी फाँसी हो जाये तो ऊपर जाके एक थैंक्स जरुर बोलना अपने गॉड फादर टाइगर करोड़ी की आत्मा को ।

लेटर पढ़के तो काफी पढ़ा लिखा लगा मुझे ये करोड़ी।

समझ में नहीं आता..आजकल पढ़े-लिखे

लोग ही क्राइम की दुनिया में क्यों आ रहे हैं । थोड़ा सोचते हुए इन्दु ने कहा..

इस लेटर को अगर हम सही समय पर कोर्ट में पेश करें तो मामला पलट सकता है। अगर नहीं... तो कम-से-कम मज़ा तो आएगा कोर्ट में तमाशा देखते हुए! "

मामा थोड़ी देर सोचते रहा। फिर हँसकर बोला—

"ठीक है इंदु... अब कोर्टरूम में तुम्हारा 'कॉमेडी शो' देखना पड़ेगा। "

इंदु ने मजाकिया अंदाज में सलामी दी —

"तो तैयार रहिए, बलवंत मामा! ये केस मैं 'लॉ एंड ऑर्डर' नहीं, 'लॉ एंड लॉफ्टर' से लड़ूँगी। "

🌎🌎

नेहा का घर, रात का समय।

टेबल पर चाय, समोसे और फाइलें बिखरी हैं। नेहा,हुसैन और इंदु तीनों बैठे हैं।

इंदु (समोसा उठाते हुए) –

"वाह ! पहले चाय-समोसा... फिर देशभक्ति। खाली पेट स्ट्रेटजी नहीं बनती। "

हुसैन – "तुम्हें तो हर वक्त खाने की पड़ी रहती है इंदु! "

इंदु (हंसकर) – "अरे भाई, वकील का दिमाग़ तभी चलता है जब पेट भरा हो। अब सुनो नेहा, ... तुम्हारे पापा की जान बचानी है, और असली कातिलों को बेनकाब करना है। मगर तरीका ऐसा होना चाहिए कि जज

भी बोर न हो, और मीडिया वाले मसाला भी पा जाएं। "

नेहा (गंभीर होकर) – "मगर ये आसान नहीं होगा... जिन चार बड़े नामों का ज़िक्र है, वो लोग बहुत ताक़तवर हैं। "

इंदु (आँख मारते हुए) – "ताक़तवर लोग भी 'मिर्ची परांठा' खाते हैं और बदहजमी में कराहते हैं। बस हमें उनकी कमज़ोरी ढूँढनी है। देख लेना... कोर्ट में मज़ा आएगा। "

हुसैन – "मैंने पुराने केस की फाइलें निकलवाना शुरू कर दी हैं। उस मास्टर जी की मौत... उसके परिवार से भी मिलूँगा। हो सकता है कोई राज़ मिले। "

नेहा – "और मैं... पापा से सच निकलवाऊँगी। उन्होंने अब तक जो छुपाया है, वो हमारे केस की सबसे बड़ी कुंजी हो सकती है। "

इंदु (समोसे का आखिरी टुकड़ा खाते हुए) – "ठीक है। तो हमारी टीम का नाम रख लो – 'मिशन मंगूस बचाओ समिति' यानि MMBS। हुसैन करेगा इन्वेस्टिगेशन, नेहा करेगी इमोशनल डायलॉग, और मैं करूंगी कोर्ट में धमाल! "

हुसैन (मुस्कुराते हुए) – "मतलब तुम कॉमेडियन हो, हम बस एक्स्ट्रा? "

इंदु – "कॉमेडियन नहीं, स्मार्ट लॉयर। जब मैं जज के सामने खड़ी होती हूँ ना... तो सामने वाले वकील का पसीना ऐसे निकलता है जैसे भुट्टे पर मक्खन पिघल रहा हो। "

तीनों हँस पड़ते हैं।

नेहा पहली बार इतने दिनों में हल्की-सी मुस्कान देती है।

नेहा (धीरे से) – "थैंक्यू... तुम दोनों को।

अगर मैं अकेली होती, तो शायद टूट जाती। "

हुसैन – "नेहा, हम सब साथ हैं। और याद

रखना... बाप चाहे अपराधी हो, मगर बेटी का हक़ है कि सच सामने आए। तुम्हारे पापा अगर निर्दोष हिस्से में हैं, तो ये दुनिया जरुर देखेगी। "

इंदु (चाय का प्याला उठाकर) – "तो... Cheers !

हमारी टीम जल्द ही कोर्ट और जंगल – दोनों में धूम मचाने वाली है ।

🌎🌎

"हुसैन की फील्ड इन्वेस्टिगेशन "

लोकेशन: इशिका के गाँव का पुराना स्कूल और मास्टरजी का घर।

गाँव की तंग गलियाँ, टूटी सड़क, चारों ओर बकरियाँ घूम रही हैं। हुसैन अपनी जीप से उतरता है।

हुसैन (गाँव के एक लड़के से) –

"अरे ओ छोटे! ये मास्टरजी का घर कौन सा है? "

लड़का –

"वो जो सामने है... जिसके बाहर नीम का पेड़ है। मगर साहब, वहाँ मत जाइये... वो घर तो मनहूस कहलाता है। "

हुसैन (मुस्कुराकर) –

"मनहूस घर वही कहलाता है जहाँ सच्चाई दबा दी जाती है और सच की तलाश में अब मैं फिलहाल वही जा रहा हूँ। "

घर में पहुँचकर हुसैन देखता है —

एक बुजुर्ग औरत आँगन में बैठी है, आँखों में थकान और चेहरे पर पीड़ा।

हुसैन –

"नमस्ते अम्मा। मैं इंस्पेक्टर हुसैन हूँ।

मास्टरजी के परिवार से बात करनी थी। "

औरत ने हुसैन को गौर से देखा, फिर आह भरते हुए बोली —

"तुम्हें भी सच चाहिए? सच तो मेरे बेटे के साथ ही दफन हो गया बाबू। "

हुसैन (धीरे से) –

"नहीं अम्मा, सच दफन नहीं होता। मैं उसे ढूँढने आया हूँ। "

औरत रो पड़ी —

"मेरे बेटे ने उस लड़की इशिका के लिए गवाही देने की ठानी थी।

बोला था – मैं सच्चाई बोलूँगा, चाहे कुछ भी हो। और उसी हफ्ते सड़क हादसे में उसकी जान चली गई।

सबको पता है वो हादसा नहीं था... मगर किसके खिलाफ आवाज़ उठाते हम ?

ऊपर बैठे लोग भूत की तरह हैं... दिखते नहीं, बस डराते रहते हैं। "

इतने में अंदर से एक नौजवान निकलता है — मास्टरजी का बेटा।

उसके हाथ में पुराना लकड़ी का बॉक्स है।

नौजवान –

"माँ, इन्हें दिखा दो। शायद अब यही सही वक्त है। "

बॉक्स खोलने पर अंदर से पुराने कागज, एक आधी जली डायरी और कुछ तस्वीरें मिलती हैं।

हुसैन (उत्साह से) –

"ये... ये तो बहुत काम की चीज़ें हैं! इसमें तो नाम लिखे हैं... जज रमेश डोंगरे, एडवोकेट रतन, इंस्पेक्टर राज शेखर...! "

नौजवान जल्दी से कहता है —

"हाँ साहब! पापा कहते थे कि ये लोग ही इशिका और उसके परिवार की बर्बादी के असली जिम्मेदार हैं। मगर पापा का

एक्सीडेंट होते ही सबूतों का आधा हिस्सा गायब हो गया। सिर्फ़ ये टुकड़े बचा पाए थे हम। "

हुसैन –

"मतलब खेल बड़ा था... और पापा ने सही दिशा पकड़ी थी। लेकिन घबराओ मत, अब इन टुकड़ों से भी पहाड़ खड़ा कर देंगे हम। "

तभी बाहर से शोर सुनाई देता है।

कुछ दबंग किस्म के लोग लाठियाँ घुमाते हुए आते हैं।

दबंग –

"ओए! क्या कर रहा है तू यहाँ? ये गाँव तेरे बाप का नहीं है। ज्यादा दखल देगा तो तू

भी मास्टरजी की तरह 'एक्सीडेंट' का शिकार हो जाएगा। "

हुसैन (हँसकर) –

"ओ हो... धमकी भी दे रहे हो? और डर भी रहे हो ..अरे भाई, मैं ऐसी धमकियों से नहीं डरता।

मेरी गिनती तो सारी मीडिया और सारी दुनिया जानती है — एनकाउंटर नंबर 502... टाइगर करोड़ी।

याद रखना ,भले ही ये एनकाउंटर नम्बर अनऑफिसियल है मेरा लेकिन जानते तो मुझे ऑफिस वाले भी हैं ।

और अब अगर ज़्यादा शोर मचाया तो 503 तुम्हारे नाम लिख दूँगा। "

गिनती कभी भी बढ़ भी सकती है इसलिए तुम्हारी बेहतरी इसी में है कि यहाँ से फूट लो ।

दबंग सहमकर पीछे हट जाते हैं।

हुसैन ने सबूतों का बॉक्स उठाया और बाहर निकलते हुए सोचा —

"ये तो बस शुरुआत है। असली खेल अभी बाकी है। अब कोर्ट में सिर्फ़ लेटर नहीं, ये सबूत भी धूम मचाएँगे।

और साला सटकेला,तू जहाँ भी है और..जिस हाल में भी है... तेरे लिए तो मेरा खास तोहफ़ा पहले से ही तैयार है।

तेरे से ज्यादा वफादार तो टाइगर करोड़ी निकला जो कम से कम मरते-मरते कुछ तो

नेक काम कर गया..।

सटकेला..कब तक छुपेगा मुझसे ..आखिर कब तक खैर मनायेगा तू..तुझे तो मेरे ही हाथों मरना है..इसमें कोई शक नहीं । अब देखना यही है कि तेरा एनकाउंटर नम्बर क्या होगा ।

🌎🌎

सीन – "अपर कोर्ट का पहला दिन "

कोर्ट हॉल में चहल-पहल थी।

एक तरफ़ बड़े-बड़े वकील काले कोट में अकड़कर बैठे थे, दूसरी तरफ मीडिया कैमरे घुमा रही थी।

बीच में जज साहब बैठे थे – गंभीर चेहरे के साथ, लेकिन लगता था अंदर ही अंदर वो

कुछ सोच रहे हैं “आज फिर लंबा दिन है। “

जज – “केस नम्बर 702... बलवंत उर्फ़ मंगूस मामा। बचाव पक्ष?? “

इंदु भटनागर खड़ी हुईं।

हॉल में हल्की सरसराहट हुई — क्योंकि इंदु का अंदाज़ ही अलग था।

हाथ में मोटी फाइल, पर चेहरे पर ऐसी मुस्कान जैसे पिकनिक पर आई हो।

इंदु – “माय लॉर्ड, मैं बचाव पक्ष की वकील इंदु भटनागर। आज मैं कोई भारी-भरकम अंग्रेज़ी नहीं बोलूँगी, क्योंकि अंग्रेज़ों के जाने के बाद भी अगर हम उन्हीं की भाषा

में न्याय माँगें तो ये ग़लत होगा। मैं आम लोगों की भाषा में ही अपना पक्ष रखूँगी। उम्मीद है आप बुरा नहीं मानेंगे। “

जज ने चश्मा नीचे करके देखा, फिर बोले – “बात जारी रखिए। “

इंदु –

“माय लॉर्ड, मेरा क्लाइंट एक ऐसा शख़्स है जो अपराधी कहे जाने से पहले एक वीर सैनिक था। उसने इस देश के लिए अपनी जान दांव पर लगाई। अगर उसने बंदूक उठाई, तो उसकी वजहें थीं।

लेकिन आज मैं यह बहस नहीं करूँगी कि वो निर्दोष है या गुनाहगार। आज मैं बस ये

साबित करूँगी कि कहानी अधूरी है, और असली अपराधी कोई और हैं। "

(मीडिया वाले आपस में कानाफूसी करने लगे – "ओहो, ये तो मसाला है! ")

विपक्षी वकील (खड़े होकर) – "ऑब्जेक्शन माय लॉर्ड! ये सब भावुकता दिखाकर कोर्ट को गुमराह कर रही हैं। "

इंदु (मुस्कुराकर) – "ऑब्जेक्शन स्वीकार है, पर एक बात बताइए, साहब – अगर सच्चाई सामने लाना गुमराह करना है तो फिर राह कौन दिखाएगा?

आप? "

कोर्ट में हल्की हँसी गूँज उठी। जज ने हथौड़ी बजाई – "साइलेंस! "

इंदु ने टेबल से एक पुराना बॉक्स उठाया – वही जो हुसैन गाँव से लाया था।

"माय लॉर्ड, यह सबूत उस मास्टरजी का है जिसने सच बोलने की कोशिश की थी... मगर अफसोस .. आज वो इस दुनिया में नहीं हैं।

एक्सीडेंट कहकर केस बंद कर दिया गया, लेकिन उसके परिवार ने जो बचाया – वो ये है। "

इंदु ने बॉक्स खोला। उसमें से आधी जली डायरी और फोटो निकाली।

इंदु –

"इसमें साफ़ लिखा है – जज रमेश डोंगरे, एडवोकेट रतन सिंघानिया, इंस्पेक्टर राज शेखर और एजुकेशन मिनिस्टर मदन सिंह... ये वो नाम हैं जिनसे असली कहानी जुड़ी है।

और सबसे बड़ा सवाल – मास्टरजी को क्यों मारा गया? क्यों उनकी गवाही अदालत तक पहुँचने से पहले ही ख़त्म कर दी गई? "

कोर्ट हॉल में सनसनी फैल गई।

जज (गंभीर होकर) – "क्या आपके पास और भी कोई सबूत है? "

इंदु ने हल्का सा सिर झुकाया –

"माय लॉर्ड, अभी तो ये ट्रेलर है। असली फिल्म बाकी है। "

कोर्ट में फिर हल्की हँसी छिड़ गई।

नेहा पीछे बेंच पर बैठी थी। उसकी आँखों में आँसू थे, पर चेहरे पर गर्व भी था ।

उसने हुसैन की ओर देखा — हुसैन ने सिर हिलाकर इशारा किया, "हम सही दिशा में जा रहे हैं। "

इसी बीच एक बड़ा ट्विस्ट हुआ।

विपक्षी वकील ने अचानक एक नया कागज़ कोर्ट में लहराया।

विपक्षी वकील –

“माय लॉर्ड, बचाव पक्ष जो ये बॉक्स दिखा रही है... यह नकली है! हमें सूचना मिली है कि यह डायरी और फोटो सब झूठे हैं, फर्जी तरीके से तैयार किये गए हैं। ”

कोर्ट में शोर मच गया।

जज ने हथौड़ी बजाई – “ऑर्डर! ऑर्डर! ”

इंदु हड़बड़ाई नहीं। वह मुस्कुराई और बोली –

“वाह!

देखिए माय लॉर्ड, जैसे ही सच का तीर चला... वैसे ही झूठ की ढाल सामने आ गई। यही सबूत है कि हमारी राह सही है।

असली गुनहगार डर रहे हैं। ”

जज ने गम्भीर स्वर में कहा –

“अगली तारीख पर इन सबूतों की फोरेंसिक जाँच होगी। और अगर यह सच निकले तो बड़े नामों को भी कटघरे में खड़ा करना पड़ेगा। ”

कोर्ट स्थगित हो गया।

बाहर निकलते ही मीडिया वालों ने इंदु को घेर लिया।

रिपोर्टर –

“मैडम, आप इतना कॉन्फिडेंट कैसे बोल गईं? ”

इंदु (हँसते हुए) –

"क्योंकि मेरी टीम में इंस्पेक्टर हुसैन है... और मेरे पास नेहा जैसी समझदार इंस्पेक्टर बेटी है। सच को जितना दबाओगे, उतना ही

वो जोर से बाहर आएगा। अब देखना, खेल असली मज़े पर है। "

वैसे भी ..बीमार हो या बीमारी..बीमारी का इलाज होना चाहिए न कि बीमार का सफाया ही ! हां, असली वायरस अभी पकड़ में नहीं आया है शायद..बस उसी की डायग्नोसिस जारी है ..

फिर तो कानून का टीका लगेगा ही ।

चाहे वायरस कोई भी हो । फिर वो मंगूस मामा ही क्यों न हो ।

मैं सिर्फ सच के साथ खड़ी हूँ और सिर्फ सच को ही बचाऊंगी .. वैसे भी मुझसे हर अपराधी डरता है क्योंकि मैं अपराधी का

झुठ देखकर बीच में ही केस को छोड़ देती हूँ ।

शुक्र है, मंगूस मामा अपराधी जरूर है मगर कोई झूठ अभी तक साबित नहीं हुआ है और सच मुझे पसंद है ।

🌎🌎

सीन – "सटकेला की चाल "

रात का समय।

जंगल में एक टेढ़ा-मेढ़ा कच्चा रास्ता। बीच में आग का अलाव जल रहा है। चार-पाँच आदमी बैठे हैं, और उनके बीच में सटकेला – सिर पर पगड़ी, चेहरे पर वही चालाक मुस्कान।

सटकेला (हुक्का पीते हुए) –

“मामा जेल में है... और कोर्ट में धूम मचा रहा है।

इंदु नाम की वकील मसाला डाल रही है, और पुलिस वाला हुसैन सबूत ढूँढ रहा है। अब अगर मामा बच गया, तो मेरा राजा बनना ख्वाब रह जाएगा।

समझ नहीं आता ..स्साले टाइगर करोड़ी को भला मुझसे क्या शिकायत थी..मुझे उसके लेटर को मामा तक पहुँचाना ही नहीं था..समझ नहीं आता..मैं इतना घोंचू कैसे हो गया ।

एक गुर्गा बोला –

कोई भी घोंचू मां के पेट से पैदा नहीं होता सटकेला भैया !

इधर मेरा दिमाग सटकेला है और तेरे को मसखरी सूझ रहा है पागल ?

मेरा कहना था..तो फिर आगे हम लोग करेंगे क्या, सटकेला भैया? “

सटकेला हंसा –

“करना क्या है? पहले तो मीडिया में ये खबर उड़ाओ कि मामा जेल से भागने वाला है।

लोग डरेंगे, पुलिस परेशान होगी।

फिर... हम खुद जेल के पास धमाका कर देंगे। सबको लगेगा कि मामा बाहर निकल आया। लेकिन हकीकत में... मामा वहीँ रहेगा। बस, पुलिस और जनता दोनों के मन

में डर बैठ जाएगा कि मामा अब भी ‘ख़ौफ़ का दूसरा नाम’ है। “

गुर्गा तालियाँ बजाने लगे।

सटकेला ने आँखें तरेरीं और बोला –

“और हाँ, अगर मामा ने सच में बाहर आने की ठानी, तो उसे भी ‘हीरो’ नहीं बनने दूँगा। हीरो सिर्फ़ एक होगा – साउथ सटकेला! “

सारे गुर्गे एक साथ चिल्लाए –

“जय हो सटकेला राजा की ! “

सटकेला हुक्के का कश खींचते हुए बोला –

“अब खेल असली मज़े में आएगा।

इंदु-हुसैन-नेहा… सब सोचेंगे कि वो जीत

रहे हैं। लेकिन आख़िरी दाँव मेरा होगा। “

🌍

सीन – “नेहा और उसके पापा की भावुक मुलाक़ात “

अगले दिन जेल में …

मुलाक़ात का कमरा।

मंगूस मामा बैठा है, चेहरे पर थकान और आँखों में पछतावा।

सामने नेहा आई।

जेलर ने इशारा करके उन्हें अकेले छोड़ दिया।

मंगूस मामा (धीरे से) –

“आ गई तू, नेहा… मेरे लिए तो तू ही मेरी दुनिया है। “

नेहा की आँखें भर आईं।

“पापा, ये क्यों किया आपने? क्यों उस रास्ते पर चले जहाँ से वापसी ही नहीं थी?

अगर आप ही देश के खिलाफ हो गए, तो बेटी किसका सहारा ले? “

मामा की आँखों से आँसू बह निकले।

“बेटा... मैं गुनाहगार हूँ। पर यकीन मान, तेरी माँ और तेरी मासूमियत की कसम... मैंने हथियार मज़े के लिए नहीं उठाए थे।

जब अपने ही लोगों ने धोखा दिया, जब मेरे साथियों की लाशें गिनती में आईं और अफसर लोग मस्ती करते रहे... तब मेरे अंदर का सैनिक मर गया। और एक खूंखार मंगूस पैदा हो गया। “

नेहा ने पापा का हाथ पकड़ लिया।

“पापा, मैं आपको बुरा नहीं मानती... लेकिन मैं चाहती हूँ कि आप सच बोलें।

असली कातिलों के नाम उजागर करें। ताकि इशिका की, और मास्टरजी की आत्मा को शांति मिले। “

मामा काँपते हुए बोला –

“टाइगर करोड़ी ने जिन चार नामों का जिक्र किया... वही हैं असली गुनहगार।

पर बेटा, तू ये जान ले – सच्चाई की लड़ाई आसान नहीं।

ये लोग इतने ताक़तवर हैं कि तेरे जैसे

मासूम को भी कुचल देंगे। "

नेहा ने आँसू पोंछे और दृढ़ आवाज़ में कहा –

"पापा, डरिए मत। मैं आपकी बेटी हूँ। अगर आप मंगूस हैं, तो मैं भी शेरनी हूँ। इन सबको कोर्ट में कटघरे तक खींचकर लाऊँगी। "

मामा ने पहली बार हल्की मुस्कान दी।

"बेटा, तूने आज मुझे गर्व दिलाया है। मैं अब चैन से मर भी जाऊँ, तो भी खुशी होगी। "

नेहा ने तुरंत झिड़क दिया –

"मरने की बात मत कीजिए, पापा। आप

जिंदा रहेंगे। हम सब मिलकर लड़ेंगे। "

नेहा उठी और बाहर चली गई।

मामा अब अकेला था। दीवार की तरफ देखते हुए उसने बुदबुदाया –

"हे इशिका... अगर मेरी बेटी तुझे इंसाफ दिला दे, तो मेरी आत्मा को भी शांति मिलेगी। "

🌎🌎

"जेल धमाका और उसका ज़बर्दस्त जोड़-तोड़ "

रात के बारह बजे के बाद ही जंगल में अफ़वाह दौड़ पड़ी — "मंगूस मामा जेल से भागने वाला है। "सटकेला के गुर्गे मोबाइल

पकड़े-बिठाए हर कोने में ये खबर फैला रहे थे।

शहर जाग उठा। कैमरे, रिपोर्टर और सोशल मीडिया पर तरह-तरह के पोस्ट।

जज की मुट्ठी भी कांप गई — डर इस बात का कि अगर जेल से भगाने जैसा कुछ हुआ तो पूरा केस धरे का धरा रह जाएगा।

सटकेला का मकसद साफ था — माहौल हिला देना; जज पर दबाव लाना; जनता का ध्यान बँटाना ताकि टाइगर के बताए गए बड़े नामों की बात धूमिल हो जाए। और वह तो छोटा-सा धमाका भी करवा देगा । सिनेमा जैसा सस्पेंस, न्यूज चैनल का सीधा

कवरेज, और फिर सटकेला के आदमी ठाएँ-ठाएँ गायब।

पर जिस बात का सटकेला को अंदाज़ा नहीं था — इंदु, नेहा और हुसैन पहले से चौकसी पर थे।

हुसैन के पास गांव के सुराग थे, और उसने जेल के आसपास कुछ संदिग्ध गतिविधियों के बारे में पहले ही ख़ुफ़िया तौर पर खबर दे दी थी।

पुलिस की कुछ रैंकों में भी हुसैन के भरोसेमंद दोस्त थे — इसलिए जेल प्रशासन ने अप्रत्याशित लॉकडाउन कर दिया — पर यह लॉकडाउन दिखावटी नहीं, एक

चालाक जाल था।

रात के साढ़े बारह बजे के बाद सटकेला के दो आदमी दीवार के पास आए — उनके हाथों में कुछ पेटियाँ थीं। जैसे ही वे पेटियाँ लगाते, अचानक पास के पेड़ों से रोशनी चमकी, और चिल्लाहट हुई — "बम! बम! "

 कुछ तेज़ आवाज़ें और धुंआ उठा। लोग भागे, मीडिया स्टाफ हाहाकार मचाने लगे। सटकेला के लोगों ने पीछे-पीछे सड़कों पर पोस्टर और वीडियो शेयर कर दिए — "देखो! मामा भाग गया! "

पर वहीँ, हुसैन ने पहले से लगाए हुए कैमरों की रिकॉर्डिंग चालू कर दी थी। वे कैमरे

छतों पर, पेड़ों पर और एक बंद ट्रक के अंदर लगे हुए थे — सब कुछ लाइव रिकॉर्ड हो रहा था। सटकेला के गुर्गे जो पेटियाँ लगा रहे थे, उनकी ही एक शख़्सियत कैमरे में स्पष्ट दिखी — और उस शख़्स के कंधों पर वही टैटू था जो शहर के कुछ बदमाशों के छापे में हुसैन के पास पहले से मौजूद था।

🌍🌍

जैसे ही पुलिस ने लॉकडाउन का आदेश दिया और जेल के अंदर का रियालिटी चेक कर लिया गया, पता चला — धमाका छोटा और नकली था; जेल की दीवार नहीं टूटी; पर कैमरा फुटेज और ट्रक में छुपे हुए पचास-साठ गुर्गों के साक्ष्य मिलने लगे।

हुसैन ने जैसे ही उस फुटेज की कॉपी इंदु के पास भेजी, इंदु ने तुरंत मीडिया के सामने प्रेस रिलीज कर दिया — "जो लोग कोर्ट के बाहर तमाशा कर रहे हैं, वे वही लोग हैं जो असली हत्यारे और केस को दबाने के खेल में लगे हैं। "

मीडिया ने ज्यों ही रेकॉर्डिंग दिखाई, दर्शक दंग रह गए।

सटकेला के छुपे हुए गुर्गे पकड़े गए — कुछ भाग निकले पर उनका चेहरा भी कई कैमरों में कैद था। सोशल मीडिया पर क्लिप वायरल होने लगी — “सटकेला का नाटक फेल! “— हैशटैग ट्रेंड करने लगे।

इसी बीच, जेल के अंदर नेहा को हुसैन का

मैसेज मिला —

“तैयार रहो। मुझे एक मौका मिलेगा उसे सीने से पकड़ने का। “नेहा की धड़कनें तेज़ हुईं।

वह जेलर को बड़ी ही नम्रता से बोली — “मुझे एक मिनट चाहिए, पिताजी से बात करनी है। “

जेलर ने मना किया — पर तब तक क्या ही हो चुका था — सटकेला के गुर्गों के पकड़े जाने की खबर जैसे आग की तरह जेल के दरवाज़ों तक पहुँच चुकी थी।

बहरहाल जेलर के द्वारा मना करने पर कानूनी व्यवस्था की गई — और नेहा को

कोर्ट द्वारा एक विशेष अनुमति मिली कि वह पिता से मिलकर कुछ आवश्यक बातें कर सके।

मुलाक़ात का कमरा फिर से खुला — पर इस बार माहौल अलग था। मामा के लिए जो डर पैदा करने का सटकेला का इरादा था, वही डर अब सटकेला के पैरों तले जमीन खिसक जाने के रूप में बदल चुका था

— क्योंकि उसके गुर्गे पकड़े गए थे और कैमरे ने सब कुछ पकड़ लिया था।

नेहा ने मंगूस मामा यानी अपने पापा की आँखों में देखा — मामा के चेहरे पर राहत के साथ चिंता भी थी। नेहा ने धीमी सी आवाज में कहा —

"पापा, हमें उन्हें जड़ से पकड़ना है — अब हर चाल के पीछे जवाब रहेगा। "

मामा ने थोड़ी मजबूती से कहा — "बेटी... अगर सटकेला का ये नाटक फेल हुआ है तो इसका मतलब है किसी ने हमें प्यार से नहीं, जूतियों से रौंदना चाहता था। पर याद रखना, ये लोग पीछे हटेंगे नहीं — वे अब और चालें चलेंगे। "

इसी बीच इंदु भी वहाँ आई — उसके हाथ में एक छोटा सा फोल्डर था जिस पर बड़े अक्षरों में लिखा था — "कैमरा फुटेज और गिरफ्तारी रिपोर्ट "। उसने मुस्कुराकर कहा —

"मामा जी ,पावर का कमबैक देखा? अब

ये फुटेज कोर्ट में पेश करेंगे तो सटकेला की विश्वसनीयता ध्वस्त हो जाएगी और जज की नजर भी हमारे पाले में आने लगेगी। "

हुसैन ने बाहों पर हाथ रखकर कहा — "अभी बड़ी बात ये है कि हमने उन्हें पकड़ा, पर असली सवाल बड़ा है — ये गुर्गे किसके कहने पर आए थे? किसने इन्हें पैसा और हथियार दिए?

सटकेला अकेला नहीं है — यहाँ कोई और भी हाथ है जो पर्दे के पीछे हँस रहा है। "

और तभी— जेलर की जेब से अचानक एक छोटा-मोटा नोट गिरा, जिस पर किसी ठेकेदार का नाम और एक लोकेशन लिखा

था — वही लोकेशन शहर के एक पुराने गोदाम की।

नेहा की आंखें चमकीं — "वही गोदाम, वही! "उसने कहा।

फर्श पर पड़ी उस कागज़ की सूक्ष्म-सी गंध ने कहानी के अगले चरण की राह दिखा दी — गुर्गों की चर्चा अब गोदाम तक पहुँचेगी; गोदाम में शायद वह मिट्टी से भरा ख़ज़ाना होगा जो हुसैन और इंदु की टीम को असली मास्टरमाइंड तक ले जाएगा।

सटकेला का नाटक बिगड़ा — पर असली लड़ाई अभी बाकी थी।

और अब, जब गद्दार पकड़े जा चुके थे,

कहानी की एक नई कड़ी जुड़ चुकी थी — एक गोदाम, एक नोट, और एक ऐसे नाम की तलाश जो अभी पर्दे के पीछे हँस रहा था।

🌎🌎

"गोदाम का छापा "

लोकेशन: शहर के बाहर पुराना गोदाम।

रात का समय।

खिड़कियों से हल्की रोशनी झाँक रही है।

हुसैन, नेहा और इंदु एक जीप में बैठे हैं।

इंदु (धीमे स्वर में) –

"भाई, ये गोदाम है या फिल्म का सेट? बिलकुल वैसा लग रहा है जैसे अभी सलमान खान पीछे से आकर कह देगा

'स्वैग से करेंगे स्वागत'। "

हुसैन (गंभीर होकर) –

"इंदु, ये मजाक का समय नहीं है। यहाँ से हमें बड़ा सुराग मिल सकता है। "

इंदु (मुस्कुराकर) –

"अरे मैं तो माहौल हल्का कर रही हूँ। वरना डर लग रहा है। गोदाम का नाम ही डरावना है। "

नेहा (थोड़ा भावुक होकर) –

"पापा ने कहा था असली मास्टरमाइंड पर

नज़र रखो... शायद ये गोदाम ही उस तक जाने का रास्ता है। "

तीनों धीरे-धीरे अंदर घुसते हैं।

अंदर देखते हैं – पेटियों में हथियार, नकली नंबर प्लेटें, और कागज़ों का ढेर।

एक पेटी पर साफ लिखा है — "M.S. Project " l

हुसैन –

“एम.एस.? ... मतलब? “

इंदु (फुसफुसाते हुए) –

“एम.एस. तो मेरे कॉलेज का भी नाम था – ‘मस्त स्टूडेंट्स’। पर मुझे लगता है यहाँ मतलब कुछ और है। “

हुसैन ने कागज़ उठाया। उसमें नाम लिखा था – मदन सिंह (वही एजुकेशन मिनिस्टर)।

हुसैन (दाँत भींचकर) –

“यही है मास्टरमाइंड। जिसको अब तक हम सिर्फ़ कहानी का किरदार समझ रहे थे, वही असली गुनहगार है। “

तभी पीछे से शोर होता है।

गोदाम के अंदर 6–7 गुर्गे घुस आते हैं।

गुर्गा –

“ओए! कौन है? कौन घुस आया हमारे इलाके में? “

इंदु डरकर हुसैन के पीछे छिप जाती है।

“देखो भाई, मैं तो वकील हूँ... केस लड़ती हूँ।

मारपीट में नहीं आती। “

हुसैन (हंसकर) –

“तू पीछे रह... मैं संभाल लूंगा। “

हुसैन लात-घूँसों से दो गुर्गों को गिरा देता है।

बाकी तीन दौड़ते हैं – उनमें से एक नेहा की ओर झपटता है।
नेहा पास में पड़ी लकड़ी उठाकर उसे जोर से मारती है।

"बेटी को कमज़ोर समझा था क्या रे बीड़ू ? "

इंदु भी हिम्मत जुटाती है।

वो पास पड़े आटे के बोरे उठाकर गुर्गों के ऊपर फेंक देती है।
"लो! फ्री का आटा खाओ... और घर जाकर पराठा बनाओ! "

गुर्गे धूल में सफेद हो जाते हैं।
पूरा गोदाम हंसी और मारपीट के बीच रणभूमि बन जाता है।

आखिरकार सब गुर्गे पकड़ लिए जाते हैं।
हुसैन ने पेटी से निकला एक बड़ा रजिस्टर उठाया।

उसमें बड़े-बड़े नाम और पैसों का हिसाब लिखा था।
हुसैन –

"यही है असली खेल का सबूत। मंत्री, जज, पुलिस अफसर... सबको यहाँ से पैसा और हथियार मिले हैं। "

नेहा (गहरी सांस लेते हुए) –

“मतलब पापा सही थे... असली अपराधी यही लोग हैं। अब कोई इन्हें बचा नहीं सकता। “

इंदु (धूल झाड़ते हुए) –

“वाह! आज तो मैंने भी एक्शन कर लिया। अगली बार मुझे ‘इंदु – द लेडी डॉन’ कहकर बुलाना। “

तीनों हंस पड़ते हैं।

लेकिन उसी वक्त गोदाम के एक अंधेरे कोने

से हल्की आवाज आती है —

“खूब हँस लो... असली खेल तो अब शुरू होगा। “

तीनों चौंककर देखते हैं —

कोने से धीरे-धीरे निकल रहा था... सटकेला!

उसके हाथ में एक चिट्ठी और चेहरे पर वही चालाक मुस्कान थी।

इंदु ने मजाक में कहा - जब देखो ,तुम्हारे हाथ में कोई न कोई चिट्ठी - पत्री जरूर रहता है..तू कोई डाकिया तो नहीं है न ..बेवजह हम लोग तुझे आतंकी समझ रहे हैं 😁

उसके चेहरे पर शैतानी हंसी, हाथ में पिस्तौल, और आँखों में वही चालाकी।

सटकेला –

“वाह-वाह... क्या बात है!

वकील इंदु, इंस्पेक्टर हुसैन और मंगूस मामा की बिटिया नेहा... सब एक साथ?

ये तो वही बात हो गई – खिचड़ी में तीन का तड़का। “

इंदु (हंसते हुए) –

“अरे सटकेला भाई, तुम्हारी एंट्री भी बॉलीवुड विलेन जैसी है।

थोड़ा बैकग्राउंड म्यूजिक भी बजा देते तो मज़ा दुगुना हो जाता। “

सटकेला –

“चुप ओ पगली वकीलनी ! तेरा मज़ाक कोर्ट में चलता होगा, यहाँ नहीं।

यहाँ तो चलेगी बस ट्रिगर की आवाज़। “

हुसैन (आगे बढ़कर) –

“सटकेला, हथियार नीचे रख दे। तू जानता है – 502 एनकाउंटर मैंने किया है।

503 तेरे नाम पर करने में मुझे ज़रा भी देर नहीं लगेगी। “

सटकेला (तालियाँ बजाकर हँसता है) –

“वाह!

एनकाउंटर स्पेशलिस्ट...

मगर भूल मत, मैं 502 नहीं... एक्स्ट्रा इनिंग्स वाला खिलाड़ी हूँ।

और खिलाड़ी हमेशा आखिरी ओवर तक खेलता है। “

अचानक सटकेला सीटी बजाता है।

चार और गुर्गे अंधेरे से निकल आते हैं। हाथों में लाठी-डंडे।

नेहा (गुस्से से) –

“डराने की कोशिश मत करना। मेरे पापा ने जो रास्ता चुना वो ग़लत था,

लेकिन मैंने सही रास्ता चुना है – और तुम्हारे जैसे गुंडों को मिटाना ही मेरा फर्ज़

है। “

सटकेला –

“अरे वाह! पापा की परी भी खतरनाक निकली।

लगता है तुझे तो लेडी मामा बुलाना पड़ेगा। “

इंदु (नेहा के कान में फुसफुसाकर) –

“सच कहूँ तो नाम बुरा नहीं है... ‘लेडी मामा’। अगली बार अगर तू फिल्म बनाए तो मैं पोस्टर डिज़ाइन कर दूँगी। “

नेहा हंसते-हंसते खुद को रोक लेती है।

अब माहौल गंभीर हो जाता है।

सटकेला ने पिस्तौल उठाई और बोला –
 “ये सबूत, ये रजिस्टर, ये पेटियाँ – सब मुझे दे दो।
वरना... तुम्हारी कहानी यहीं खत्म। ”

हुसैन –
 “तू सोच भी नहीं सकता कि हमारे पास क्या-क्या है।

ये सबूत अब सिर्फ़ इस गोदाम में नहीं... बल्कि तीन जगह और पहुँच चुके हैं। ”

इंदु (चुटकी बजाकर) –
 “हाँ-हाँ, मैंने तो एक कॉपी अपने पड़ोसी की दूधवाली को भी दे दी है।
अगर कल तक मैं कोर्ट में नहीं पहुँची, तो

दूध के साथ सबूत भी डिलिवर हो जाएगा। ”

सटकेला गुस्से से तिलमिला उठता है।

 “ये वकीलनी तो मेरा दिमाग खा जाएगी! ”

तभी हुसैन अचानक लपकता है।
सटकेला की पिस्तौल छीनकर उसे जमीन पर गिरा देता है।

नेहा पास पड़ी कुर्सी उठाकर एक गुर्गे को मारती है।

इंदु भी पीछे नहीं रहती – वो पास रखी लाल मिर्च का थैला उठाकर बाकी गुर्गों के मुँह पर फेंक देती है।

गुर्गे जल-जल कर चिल्लाने लगते हैं –

“आग! आग! “

इंदु (हँसकर) –

“अरे मूर्खो, ये आग नहीं... मिर्ची का कमाल है! अब जाओ घर, प्याज काटते रहना। “

सटकेला घिर चुका है।

हुसैन ने उसकी गर्दन पकड़ ली।

नेहा ने सीधे आँखों में देखते हुए कहा –

“तेरे जैसे लोग सोचते हैं डर ही सबकुछ है...

लेकिन असली ताक़त सच में होती है। और सच को अब कोई नहीं रोक सकता। “

सटकेला (चालाक मुस्कान के साथ) –

“सच को कौन रोकेगा...? पर याद रखना –

मदन सिंह अकेला नहीं है।

उसके पीछे ऐसे चेहरे हैं जिन्हें तुम सोच भी नहीं सकते।

तुम्हारा खेल अभी शुरू हुआ है... और मैं तो बस प्यादा हूँ। “

इतना कहकर सटकेला अचानक धुआँ बम फेंकता है और अंधेरे का फायदा उठाकर भाग निकलता है।

हुसैन और नेहा बाहर दौड़ते हैं, लेकिन सटकेला अंधेरे में गायब हो चुका है।

इंदु (खाँसते हुए) –

"ये विलेन लोग भी न... बिना धुआँ-धक्कड़ के भाग ही नहीं सकते।

सीधा बोलकर भाग जाएँ तो क्या बिगड़ जाएगा? "

तीनों हँसते भी हैं और सोच में भी पड़ जाते हैं।

क्योंकि अब साफ हो चुका है – असली जाल सिर्फ़ सटकेला नहीं, बल्कि मंत्री मदन सिंह और उसके पीछे की पूरी ताक़तवर मंडली है।

🌎🌎

"मदन सिंह और गुप्त चेहरों की बैठक "

लोकेशन: राजधानी का एक शानदार फार्महाउस।

बड़ा सा हॉल, झूमर की रोशनी, मेज़ पर

स्कॉच और कबाब।

बाहर कड़ी सुरक्षा, अंदर VIPs की महफ़िल।

टेबल के बीच बैठे हैं –

एजुकेशन मिनिस्टर मदन सिंह।

गले में सोने की मोटी चेन, हाथ में महंगी घड़ी, और चेहरे पर वही घमंडी हंसी।

उसके चारों ओर बैठे लोग:

• जज रमेश डोंगरे – कोट-पैंट में, मगर आँखों में हमेशा डर।

• एडवोकेट रतन सिंघानिया – चालाक मुस्कान वाला, हमेशा फोन पर।

• इंस्पेक्टर राज शेखर – वर्दी में नहीं, पर दबंग अंदाज़ में।

• और एक रहस्यमयी शख़्स – चेहरा आधा परदे में छुपा, सिर्फ़ सिगार का धुँआ निकलता है। बाकी सब उसे "सर "कहकर बुलाते हैं।

मदन सिंह (हँसते हुए) –

"तो भाइयों, खेल मज़ेदार होता जा रहा है।

मंगूस मामा फाँसी की रस्सी के पास... और सबूतों के साथ खेल हमारा।

सटकेला भी अपना काम कर रहा है... थोड़ा फिल्मी स्टाइल में, पर काम तो कर रहा है। "

एडवोकेट रतन –

"मगर सर, ये वकील इंदु बहुत नाटक कर रही है।

कोर्ट में मजाक करती है और जनता ताली बजाती है।

अगर जनता उसके पक्ष में आ गई तो... "

मदन सिंह (बीच में रोककर) –

"अरे छोड़ो यार! जनता आजकल ट्विटर पे ट्रेंड बदलने में भी देर नहीं लगाती।

एक दिन #SaveMongoose, अगले दिन #HangMongoose।

जनता तो हमारी जेब में है। बस अख़बार और चैनल वालों को खिलाओ – सब सेट। "

इंस्पेक्टर राज शेखर –

"लेकिन हुसैन का दिमाग़ परेशान कर रहा

है।

वो हर जगह सूँघ रहा है, और अब गोदाम से भी बचा लाया सबूत। "

मदन सिंह –

"तो क्या करें? हुसैन को भी सटकेला की लिस्ट में डाल दो।

थोड़ा ड्रामा, थोड़ा एनकाउंटर – और कहानी खत्म।

वैसे भी, हीरो बहुत दिन ज़िंदा रहे तो विलेन के लिए ताली कौन मारेगा? "

तभी परदे के पीछे से वो रहस्यमयी चेहरा बोला।

उसकी आवाज़ धीमी पर डरावनी थी।

"तुम लोग बहुत शोर मचा रहे हो।

सच को छुपाने के लिए सिर्फ़ पैसा और डर ही काफी नहीं होता...

सिस्टम को अपने कब्ज़े में लेना पड़ता है।

और सिस्टम पहले ही हमारे कब्ज़े में है। "

सबकी सांसें थम गईं।
यह वही शख़्स था जिसकी परछाईं तक आम लोग नहीं देख पाते।

मदन सिंह सिर झुकाकर बोला –
"जी सर, आप सही कह रहे हैं।
हमारा बस काम है हँसते रहना और नोट गिनते रहना। "
रहस्यमयी चेहरा सिगार का लंबा कश खींचकर बोला –
"नेहा, इंदु और हुसैन... ये तीनों हमारे प्लान

को बिगाड़ सकते हैं।
इनको डराओ, फँसाओ... या फिर मिटा दो।
लेकिन ध्यान रहे – नाम हमारा न आए। "

सभी खामोश हो गए।
बस मदन सिंह अपनी गिलास उठाकर बोला –
"तो भाइयों, खेल शुरू हो चुका है।
अब देखना – मामा की रस्सी कसते ही उनकी आँखों में आँसू नहीं, आग दिखेगी।
और वो आग... हमारी जीत होगी। अपने ही लगाये आग में वो झुलस के मरेंगे ..देखने में बहुत मजा आयेगा "

सब हँस पड़े।
हॉल में कबाब की खुशबू और सिगार का

धुआँ मिलकर एक अजीब सा डरावना माहौल बना रहे थे।

🌎🌎

"कोर्ट में सबूतों का धमाका "

लोकेशन: अपर कोर्ट, भीड़ से भरा हॉल।

जज गम्भीर चेहरे के साथ बैठे हैं, मीडिया कैमरे चमका रही है, और विपक्षी वकील अकड़कर खड़े हैं।

इंदु की एंट्री

जज – "बचाव पक्ष, क्या आपके पास नए सबूत हैं? "

इंदु खड़ी हुईं।

चेहरे पर वही मस्त मुस्कान, हाथ में मोटी फाइल और साथ में हुसैन का दिया हुआ रजिस्टर।

इंदु –

"माय लॉर्ड, आज का दिन बड़ा मजेदार है।

क्योंकि आज मैं सबूत दिखाऊँगी, और विपक्षी वकील साहब फिर वही पुराना डायलॉग मारेंगे – 'ऑब्जेक्शन माय लॉर्ड!'

तो पहले से ही बता दूँ – ऑब्जेक्शन की EMI नहीं चलती। "

कोर्ट में हल्की हँसी गूँज उठी।

विपक्षी वकील का चेहरा लाल हो गया।

पहला सबूत

इंदु –

“ये देखिए, माय लॉर्ड। यह है गोदाम से बरामद रजिस्टर।

इसमें बड़े-बड़े नाम हैं – जज रमेश डोंगरे, एडवोकेट रतन, इंस्पेक्टर राज शेखर और... एजुकेशन मिनिस्टर मदन सिंह।

इनके नाम के आगे रकम लिखी हुई है – कौन कितना लेता था और किसे बचाता था। “

मीडिया वाले फौरन फ्लैश मारने लगे।

“ओह माय गॉड, मंत्री का नाम भी आ गया! “

विपक्षी वकील (खड़े होकर) –

“ऑब्जेक्शन माय लॉर्ड! ये सब फर्जी है।

आजकल तो फोटोशॉप से कोई भी सबूत बना सकता है। “

इंदु (मुस्कुराकर) –

“वाह! मतलब अगली बार आप शादी की फोटो भी फोटोशॉप से ही बनवाएँगे?

भाई, ये सबूत असली हैं – क्योंकि इनके साथ वीडियो फुटेज भी है।

और वीडियो में आपके प्यारे सटकेला भाई खुद हथियार पहुँचाते पकड़े गए हैं। “

जज ने भौंहें तरेरीं।

“वीडियो चलाइए। “

बड़े स्क्रीन पर वीडियो चला –

सटकेला और उसके गुर्गे गोदाम में पेटियाँ सजाते हुए, और वही टैटू वाला आदमी सब पैकिंग कर रहा था।

पूरा कोर्ट हॉल सन्नाटे में डूब गया।

इंदु –

"माय लॉर्ड, आप देख सकते हैं – ये खेल अकेले मंगूस मामा का नहीं था।

असल खेल तो ये बड़े लोग खेल रहे थे।

मामा को सिर्फ मोहरा बनाया गया। "

नेहा की गवाही

नेहा खड़ी हुई।

आवाज़ काँप रही थी, लेकिन आँखों में हिम्मत थी।

नेहा –

“माय लॉर्ड, मैं जानती हूँ मेरे पापा ने गलतियाँ की हैं।

लेकिन मैं ये भी जानती हूँ कि उन्हें हालात ने उस रास्ते पर धकेला।

अगर असली गुनहगार यही बड़े लोग हैं, तो सिर्फ मेरे पापा को सजा देना संभवत: न्याय नहीं होगा।

सही न्याय तभी होगा जब असली चेहरे कटघरे में खड़े होंगे। “

कोर्ट हॉल तालियों से गूँज उठा।

जज ने हथौड़ी बजाई – “साइलेंस! “

विपक्ष की हालत

विपक्षी वकील पसीने-पसीने हो गए।

मदन सिंह का नाम आते ही उनके हाथ काँपने लगे।

वे बुदबुदाए –

“माय लॉर्ड, ये सब राजनीतिक साजिश है... सरकार को बदनाम करने की कोशिश... “

इंदु (बीच में हँसकर) –

“वाह साहब! सरकार को बदनाम करने की कोशिश...

मतलब चोरी भी आप करेंगे और सजा बताने वाला ही बदनाम होगा?

कितनी अजीब बात है! “

जज का फैसला (पहली सुनवाई पर)

जज –

“कोर्ट आदेश देता है कि इन नए सबूतों की तुरंत फोरेंसिक जाँच हो।

साथ ही, जिन बड़े नामों का उल्लेख हुआ है, उन्हें भी समन भेजा जाए।

अगली तारीख पर कोर्ट में सभी हाज़िर हों। “

पूरा हॉल तालियों से गूँज उठा।

जज के कोर्ट रूम से जाने के बाद इंदु ने मुड़कर हुसैन से कहा –

“देखा? मैंने कहा था न... ये केस मैं ‘लॉ एंड लाफ्टर’ से लड़ूँगी। “

हुसैन मुस्कुराया।

नेहा ने आँखें बंद कर ली और उसने भगवान का शुक्रिया अदा किया ऊपर की ओर देखकर।

उसके चेहरे पर पहली बार उम्मीद की चमक दिखाई दी थी।

🌎🌎

"सटकेला का नया प्लान — "शहर हिलेगा "

रात गहरी थी। शहर की रोशनी नीली-पीली झिलमिला रही थी।

सटकेला अपने छोटे से दफ्तर में बैठा था ।

सामने नक्शे बिछे थे, मोबाइल पर वायरल वीडियो क्लिपें चल रही थीं, और उसकी

दीवार पर एक बोर्ड था जिस पर बड़े अक्षरों में लिखा था —

"परदा गिराओ, शोर मचाओ "।

सटकेला मुस्कराया — उसकी मुस्कराहट में खून की तीखी ठंडक थी।

"अब वक्त आ गया है, "उसने कहा,

"इंदु की हंसी का टाइम-आउट लेने का। "

उसने योजना का एक-एक हिस्सा टेप पर बोलकर अपने गुर्गों को सुनाया:

- फेस ऑफिशियल-डिस्ट्रैक्शन (मीडिया नाटक):
- कुछ नकली सोशल मीडिया अकाउंट्स रात में सक्रिय होंगे — #MongooseEscape,

#FakeEvidence ट्रेंड कराया जाएगा। राउंड-द-clock छोटे-छोटे क्लिप्स — कट-पेस्ट, गाली-गलौज, और स्पेशल मूवमेंट ड्रामा।

इन सबसे जनता का ध्यान कोर्ट सबूतों से हटेगा।

- विटनेस प्लांट (गवाहों को गायब कराना):
- मास्टरजी का परिवार जिसने सबूत दिया था — उनमें से एक युवा बेटा जो रजिस्टर संभाले था — उसे "भेज "दिया जाएगा बाहर की दुनिया में, ताकि वह समय पर कोर्ट न पहुँच सके।

अगर वह गया नहीं, तो हम एक 'नया सच' पेश करेंगे — कि रजिस्टर नकली था।

- क्लासिक मिस-इनफॉर्मेशन (फेक फुटेज)
- एक पुरानी क्लिप को एडिट करके दिखाया जाएगा कि इंदु और हुसैन का रिकॉर्ड खुद किसी राजनीतिक गिरोह के साथ है — इससे उनका भरोसा घटेगा। (सटकेला जानता था कि मीडिया संवेदनशील है; थोड़ी झुंझलाहट काफी है)।
- प्रोप-ड्रामा (छोटा धमाका, बड़ा शोर):
- कोर्ट के बाहर एक छोटा धमाका कराना — ताकि सुरक्षा बढ़े, कोर्ट का शेड्यूल टले, और जज पर मनोवैज्ञानिक दबाव बन जाए। जज का ध्यान और समय बंट जाएगा।

सटकेला ने ठहाका लगाया — “हमने सिनेमा जैसा शोर बनाया तो जनता

पॉपकॉर्न लेकर आएगी और तब तक असली फ़िल्म पीछे छूट जाएगी। “

सीन — “इंडस्ट्री ऑफ शोर शुरू होता है “

अगले दिन सुबह से ही सोशल मीडिया पर फर्जी क्लिपें चलने लगीं।

किसी अज्ञात अकाउंट से एडिटेड वीडियो आकर वायरल हुआ — जिसमें इंदु एक संदिग्ध शख़्स के साथ नज़र आ रही थी (दरअसल क्लिप एडिट की हुई थी)। तमाम चैनल्स ने इसे पकड़ा —

हेडलाइन बनी: “क्या वकील इंदु का कनेक्शन? “

नेहा का फोन घंटों नहीं रुका। लोग ट्वीट

कर रहे थे; विपक्षी लॉबी खुश दिखी। नेहा ने चेहरे पर गुस्सा छुपाया और इंदु के पास भागी —

“दीदी, ये क्या कर रहे हैं? ये सब फेक है! “

इंदु ने ठंडे दिमाग से कहा — “डरना नहीं नेहा। चलो गेम की नई चाल समझते हैं। ये क्रिएटिविटी है — पर हमारे पास असली रिकॉर्ड और फोरेंसिक रिपोर्ट भी है। हम प्रूफ से जवाब देंगे। “

लेकिन सटकेला वहीं नहीं रुका।

दोपहर को गोदाम के पकड़े गए कुछ गुर्गों में से एक को अचानक कुछ लोग उठाकर ले गए — उसका मोबाइल बंद आ गया।

हुसैन ने फ़ौरन पूछा — “एक गुर्गा कहाँ गया? ”

गोदाम की उसी रात की CCTV क्लिप में कुछ लोग दिखाई दिए — पर अब वे क्रमशः गायब थे।

हुसैन की भौं तनी।

उसने अपनी टीम मोबाइल ट्रैकिंग पर लगाया — लोकेशन थोड़ी देर के लिये मिली, फिर टूट गई। किसी ने उसे दबा दिया ।

“सटकेला का खास झटका —

कोर्ट से पहले बड़ा धमाका ”

शाम को कोर्ट के बाहर पुलिस चौकियों के पास एक तेज़ धमाका हुआ — छोटा, पर आँखों में बड़ा धुँआ।

लोग भागे; मीडिया कैमरा दौड़ा; कोर्ट का सुरक्षा बल अलर्ट हुआ। जज ने फौरन सुनवाई स्थगित करने का आदेश दे दिया।

सटकेला का मकसद पूरा — कोर्ट की अगली तारीख अटक गयी, मीडिया का फोकस धमाके पर, और जनता की भावनाएँ ग़लत दिशा में बहनी शुरू हुईं। सोशल मीडिया पैटर्न ने तब्दीलिया दिखाई — हैशटैग बदल गए; लोग अब “सुरक्षा “और “आतंक “की बात कर रहे थे, न कि रजिस्टर की।

इंदु ने उसके पास आई हुई एक अन्योन्य

व्यक्ति के द्वारा धमकी भरी चिठ्ठी को फाड़कर कहा —

“वे खेल, खेल रहे हैं... पर हर खेल का एक सुराग होता है। “हम किसी भी सूरत में डरने वाले नहीं और रुकने वाले भी नहीं हैं ।

अब तो होकर ही रहेगा - सच का उजाला, चार वूँदों वाला ।

नेहा आँखें फाड़ कर बोली — “पर ये नये गुर्गे कहाँ से आए ? कौन दे रहा है उन्हें पैसा? ”

हुसैन ने कहा —

जेलर की जेब से जो लोकेशन हमें मिली थी उससे गोदाम का सच तो सामने आ चुका पर अब काम और ऊपर तक देखना होगा। ”

सीन — “बड़ी हार नहीं — चतुर प्रतिक्रिया ”

इंदु ने मुस्कान बचाते हुए प्रेस कॉन्फ्रेंस रखी — पर इस बार उसने मज़ेदार और तेज़ अंदाज़ उठाया। उसने कहा:

“हमें फेक मीडिया से डर नहीं — हमें सच से प्रेम है। अगर आप झूठ फैलाना चाहते हैं तो पेन से करो, पर हमारी टीम कैमरा और कागज़ दोनों संभालती है। ”

वो हंस पड़ी — और उसकी बातों में जो चुटकी थी, उसने लोगों को मुस्कुराने पर मजबूर किया। सोशल मीडिया पर कुछ लोगों ने उसके अंदाज़ की तारीफ की

पर सटकेला का शोर स्पष्ट रूप से काम कर

रहा था।

हुसैन ने टीम को एक कमरे में बुलाया — "हमारे पास दो रास्ते हैं: या तो हम पीछे हटें और कानूनी जंग खेलते रहें, या हम उनकी चाल को उलट कर उन्हें अपने खेल में फँसाएँ।

मैं आख़िरी वाला चुनूंगा। "

उसकी आँखों में आक्रोश और योजना की झलक थी।

नेहा ने हौले से कहा — "हमें गवाहों की सुरक्षा फ़ौरन बढ़ानी होगी। और जो मोबाइल ट्रैकिंग टूटी थी — उसे फिर जोड़ना होगा।

सटकेला ने एक गुर्गे को उठा लिया; उसका

मोबाइल अब बंद है — पर उसकी आख़िरी लोकेशन ने हमें एक पड़ाव दिया था: पुराने रेलवे यार्ड के पास एक वैन। अगर वह वैन कहीं दिखे तो समझ लेना ये वही नेटवर्क है। "

इंदु ने चुटकी लेते हुए कहा — "खेल अभी रोचक है। मैं कोर्ट में और हंसाऊँगी और तुम लोग पीछे से उनके ट्रिक्स काटो।

पर एक बात याद रखना — हम गलत तरीके से नहीं लड़ेंगे। "

क्लाइमेक्स-क्लिफ हैंगर

रात के ढाई बजे — हुसैन सुनसान रेलवे यार्ड के पास खड़ा था। बारिश भी हल्की-

सी झमाझम कर रही थी। वहाँ एक वैन धीरे-धीरे आती दिखी — पर जैसे ही वह पास आई, वैन की साइड से चलती हुई एक छोटी-सी रोशनी निकली — और किसी ने फोन पर कहा:

"बंद कर दो ट्रैकिंग।

फिर ये लोकेशन टूट गया। "

हुसैन ने रेडियो से टीम को बुलाया — पर तभी वैन का दरवाज़ा खुला — और डार्क सॉफ्ट-शैडो के भीतर एक चिन्ह चमका — वही टैटू, वही चिन्ह जिसे हुसैन ने पहले देखा था।

वैन की छाया में कोई निकला — और उसने धीमी आवाज़ में कहा —

"हुसैन, तुम ज़्यादा दूर नहीं जा सकते... पर तुमने अच्छा काम किया — अब असली खेल खेलने का वक्त है। "

हुसैन ने चमकती आँखों से पूछना चाहा पर तभी वैन अचानक तेज़ी से भाग गई — और पृष्ठभूमि में एक नकाबपोश व्यक्ति की हँसी गूँजी — वही ऊँची, धीमी, और परदे के पीछे से आने वाली।

रेडियो पर इंदु की आवाज़ आई — "हुसैन! रिपोर्ट करो! "— पर हुसैन के हाथों में जो खाली परचा था, वह सिर्फ़ एक फटा हुआ कागज़ था — उस पर एक शख्स का नाम लिखा था... और नाम पढ़कर हुसैन की साँसें थम गईं।

🌎

अगली सुबह — अपर कोर्ट में सुनवाई का दिन

अदालत खचाखच भरी हुई।

चारों बड़े अपराधी —

जज रमेश डोंगरे, इंस्पेक्टर राज शेखर, वकील रतन सिंघानिया और मंत्री मदन सिंह —

अपने-अपने महंगे सूट में ऐसे बैठे थे जैसे पिकनिक पर आए हों।

और उधर मंगूस मामा — बिलकुल शांत,पश्चाताप के भाव से भरा और थका हुआ, पर सच बोलने को तैयार।

वकील इंदु भटनागर अदालत में ऐसे एंट्री

मारती हैं जैसे कोई स्टैंड-अप कॉमेडियन शो शुरू करने आई हो।

इंदु (मुस्कुराते हुए) –

"माय लॉर्ड, केस बड़ा है... आरोपी बड़े हैं... और झूठ तो सबसे बड़ा है।

तो शुरू कहाँ से करूँ? "

जज ने चश्मा नीचे किया —

"सुश्री इंदु... अदालत कोई कॉमेडी शो नहीं है। "

इंदु –

"बिलकुल, माय लॉर्ड!

अगर कॉमेडी शो होता न,

तो ये चारों अपराधी पिछले सीज़न में ही बाहर कर दिए जाते! "

अदालत में हँसी।

चारों बड़े आरोपी तमतमा जाते हैं।

☆ टाइगर करोड़ी का पत्र – गेम चेंजर

इंदु धीरे-धीरे एक फ़ाइल खोलती है।

"माय लॉर्ड, ये पत्र है टाइगर करोड़ी का —

अंडरवर्ल्ड का वो शेर, जो मरते वक्त भी कमिटमेंट निभाकर गया। कमिटमेंट यही कि अगर उसका लिखा ये लेटर न होता तो ये चारो असली अपराधी यहाँ न होते "

अगर इजाजत हो तो ये लेटर पढ़ दूँ जज साहब?

इजाजत है ! ..जज ने कहा ।

पत्र पढ़ते ही अदालत में सनसनी फैल

जाती है।

पत्र में चारों का नाम, उनके कुकर्म, और इशिका के परिवार पर किया गया जहर कांड — सब उजागर।

इंदु (नाटकीय अंदाज में) –

"माय लॉर्ड, अपराधियों से पूछना चाहूँगी...

क्या आप लोग इतना अपराध करते-करते कभी थकते नहीं?

या ये आपको सुबह दूध पीने जैसा हल्का काम लगता है? "

पूरा कोर्ट हँस देता है।

कटघरे में खड़ा इन्सपेक्टर राज शेखर गुस्से से तमतमा उठता है—

"ये कोर्ट है, थिएटर नहीं! "

इंदु –
“और आप?
आप तो कोर्ट को अपने थाने का ब्रेक रूम बना चुके हैं!

बैठो... हीरो मत बनो। “
नेहा और हुसैन एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराते हैं।

मंगूस मामा पहली बार हल्का सा सिर झुका कर हँसता है।

☆ गवाहियाँ — सच का तूफान

- इशिका का पुराना स्कूल टीचर
- मेडिकल रिपोर्ट
- पोस्टमार्टम टीम का स्टिंग ऑपरेशन
- हत्या वाले रात की CCTV डंप

इंदु ने एक-एक करके सब पेश किया।
चारों अपराधियों के चेहरे पर पसीना पिघलती मोमबत्ती जैसा बहने लगा।

💫 इंदु की अंतिम दलील (कोर्टरूम का सबसे शक्तिशाली मोमेंट)
इंदु जज के सामने खड़ी होती है...
“माय लॉर्ड,
कानून का दरवाजा हमेशा खुला रहता है —
डाकू वाल्मीकि के लिए भी,

दस्यु फूलन देवी के लिए भी...

और हर उस दुर्दांत अपराधी के लिए भी ..जो हिंसा का रास्ता छोड़कर समाज की मुख्य धारा में शामिल होना चाहता है !

क्या बलवंत सिंह उर्फ़ मंगूस मामा के लिए भी एक दरवाजा खुल सकता है ??

गलती किससे नहीं होती?

लेकिन सुधरने का हक़ — हर इंसान को मिलना चाहिए।

और ये चार?

ये अपराधी नहीं, अपराध का कारख़ाना हैं।

इनके लिए दया नहीं,

सिर्फ और सिर्फ फाँसी ही इंसाफ़ है। "

मैं बस इतना ही कहना चाहती हूँ !!

उसके बाद अदालत में सन्नाटा छा जाता है।

✩ कोर्ट का निर्णय -

जज फैसला पढ़ती हैं—

�along चारों असली अपराधी – फाँसी की सज़ा

"जिन्होंने इशिका और अन्य लड़कियों के साथ

बलात्कार, हत्याएँ और साक्ष्य नष्ट किए...

उन्हें इस अदालत द्वारा

Rare of the Rarest मानकर

फाँसी की सज़ा सुनाई जाती है। "

कोर्ट में तालियाँ।

नेहा की आँखों में आँसू— पर गर्व भी।

🔥 बलवंत सिंह उर्फ़ मंगूस मामा – नया जीवन

जज मंगूस मामा की ओर देखती हैं—

"तुम्हारी गलती बहुत ही बड़ी है पर...

तुम्हारा पश्चाताप भी उतना ही बड़ा है।

ये सच है कि तुम्हारा कानून पर भरोसा और अटूट विश्वास के साथ-साथ कानून का लगातार सहयोग ही इन खूंखार अपराधियों को उनके सही अंजाम तक पहुँचाया है ।

अगर तुम्हारा सहयोग न मिलता तो कानून पूरे सबूत के साथ शायद ही इन सरकारी

पदों को कलंकित करने वाले अपराधियों तक पहुँच पाता क्योंकि इनके अंदर सबको खरीद लेने अथवा उन्हें देख लेने की आपराधिक प्रवृत्ति हमारे सभ्य समाज के लिए निश्चित ही घातक है।

टाइगर करोड़ी के लेटर को पढ़कर साफ पता चलता है कि उसके जैसे इन्टरनेशनल आतंकी का जेल से भागने के प्रलोभन को बलवंत उर्फ मंगूस मामा द्वारा पूरी तरह नजरअंदाज कर कानून का साथ देना ये साबित करता है कि इसे भारत के न्याय प्रणाली एवं संविधान पर आज भी भरोसा है !

जेलर की रिपोर्ट,

तुम्हारा आत्मसमर्पण,

तुम्हारा सच बोलने का साहस...

ये सब साबित करता है कि तुम

खराब इंसान नहीं,

बल्कि तुम सिर्फ स्थिति एवं परिस्थितयों के मारे हुए इंसान हो।

इसलिए अदालत एक विशिष्ट सिद्धांत के आधार पर तुम्हारे लिए **OPEN JAIL** का आदेश देती है। "

पूरा कोर्ट हैरान।

जज –

"तुम अगले 10 साल तक शहीद **निसार खान** के गरीब परिवार का पालन-पोषण करोगे।

उनके बच्चों की पढ़ाई,उनकी माँ का इलाज,

घर की मरम्मत ..उनकी पुरखौती खेती..सब तुम्हारी जिम्मेदारी होगी।

अगर जरा सी भी चूक हुई,

या कोई अपराध तुमने दोबारा किया,

या भागने का प्रयास किया..

तो तुम्हारी सज़ा तुरंत बदलकर

सीधी फाँसी होगी। "

एक निगरानी समिती भी होगी जो स्थानीय

पुलिस थाना के अधीन होगा जो हर महीने अपना रिपोर्ट दर्ज करेगी और लोअर कोर्ट को प्रस्तुत भी करेगी !

अगर तुम्हारे तरफ से जरा सी भी लापरवाही हुई अपना फर्ज निभाने में तो

..भविष्य में स्वत: संज्ञान लेकर ये कोर्ट पुनर्विचार कर फैसला लेने के लिए स्वतंत्र है एवं अपना निर्णय अपने पास सुरक्षित रखती है ।

मंगूस मामा की आँखें भर आती हैं।

"माय लॉर्ड... मुझ पर इतना भरोसा? "

जज मुस्कुराई—

“अदालत बदला नहीं लेती ...

अदालत इंसाफ़ देती है। ”

सबूतों के अभाव में कुछ अपराधी भले ही छूट जाते होंगे..इसकी पूरी सम्भावना है मगर अपराधी आज नहीं तो कल जरुर पकड़े जाते हैं.. ये भी सच है ।

..बस कानून और न्याय व्यवस्था को सच का दामन किसी भी हाल में छोड़ना नहीं है ..बल्कि और भी अधिक विश्वास एवं मजबूती के साथ कानून का दामन पकड़े रहना है एवं जनता में न्याय व्यवस्था पर आस्था एवं निष्ठा बनाये रखने के लिए पूरे सिस्टम को एकजुटता से टीम वर्क के साथ काम करना होगा ताकि सच बाहर आये ।

इतने सारे पेंडिंग केस होने के बावजूद लोगों का विश्वास न्याय व्यवस्था पर आज भी है..ये साबित करता है कि न्याय व्यवस्था पर लोगों का भरोसा आगे भी रहेगा !!

हम सब संवैधानिक व्यवस्था पर पूरी आस्था और निष्ठा बनाये रखें..इन्साफ जरूर मिलेगा !!

☆ कोर्टरूम के बाहर —
इंदु का आखिरी डायलॉग

इंदु बाहर आते ही हाथ झाड़कर बोली—

“बस! केस क्लोज़। अब कौन समोसा खिलाएगा?

इतना बड़ा केस जीता है, कुछ तो खिलाओ यार ! ”

हुसैन हँसते हुए —

"इंदु, तुम इंसान हो या पेट? "

इंदु –

"वकील हूँ।

पेट और दिमाग दोनों तेज़ चलते हैं! "

नेहा मुस्कुराती है—

"दीदी... आप न होतीं तो ये लड़ाई जीतना संभव नहीं था। "

इंदु ने नेहा के कंधे पर हाथ रखकर कहा—

"अरे बच्ची...

हीरो तो तुम्हारे पापा हैं।

इतना दर्द झेलकर भी उन्होने कानून पर भरोसा किया और तुम...

तुम इस कहानी की असली शेरनी हो। "

इंदु दीदी - आपकी फीस बता दीजिये ताकि मैं अतिशीघ्र आपके एकाउंट में ट्रांसफर कर सकूं ??

इंदु ने गुस्से से कहा - पगली, दीदी भी कहती हो और फीस की भी बात करती हो !!

तुम्हारे चेहरे की मुस्कान ही मेरी असली फीस है ..

और ये फीस मुझे आगे भी तुमसे लगातार मिलते रहनी चाहिए ।

ओ.के. !!

न्याय हुआ ..इंसाफ हुआ ..यही हमारी सबसे बड़ी जीत है ..यही मेरी फीस है !!

इंदु ने नेहा को शरारत भरे अंदाज में कोहनी मारी और लगभग छेड़ते हुए कहा - अगर फीस देना ही है तो फीस का सही हकदार तो इन्सपेक्टर हुसैन है ..मैंने सब कुछ तुम दोनों की आँखों में पहले दिन से ही देख

लिया है ..आँखों की नमकीन मस्तियाँ..वाह जी वाह 😛

वो तो मैं केस की वजह से तुझे नहीं बोल रही थी अभी तक ।

अब तो केस भी फाइनल हो गया..

अब किस बात की देरी ??

"कि♡स "पर इंदु ने इस तरह जोर दिया कि नेहा पूरी तरह शरमा गई और चेहरा शर्म से सुर्ख लाल हो गया ।

बात को आगे बढ़ाते हुए इंदु ने नेहा को और छेड़ते हुए कहा- इस शरम के चक्कर में मुझे मैरिज कोर्ट में गवाही हेतु रजिस्टर में साइन करने के लिए बुलाने से मत भूल जाना ।

☆ अंतिम दृश्य — मंगूस मामा का नया जीवन

मंगूस मामा को सादे कपड़ों में,

निसार खान के छोटे से टूटी छप्पर वाले घर में पुलिस टीम द्वारा पहुँचाया जाता है।

बच्चे उसे डरते हुए देखते हैं ।

मंगूस मामा घुटनों के बल बैठ जाता है—

“डरो मत बेटा...

अब मैं तुम्हारे अब्बू की जगह खड़ा हूँ। “

उसके चेहरे पर सच्ची इंसानियत दिखती है जिसे शहीद निसार खान का परिवार दिल

से महसूस करता है ।

और ऊपर आसमान में कहीं...

बल्लू के इशिका की आत्मा संभवत: सन्तुष्ट थी..इस बात से ..देर से ही सही, मगर इन्साफ हुआ जरुर क्योंकि असली गुनेहगारों को फाँसी का फंदा लग चुका था और उसका प्यार सही-सलामत था एक शहीद परिवार की रक्षा में ..पूरी हिफाजत और सलामत के लिए ।

आज मंगूस मामा ये देखकर खुश था कि कोर्टरूम में फैसले के बाद..

उसकी बिटिया नेहा ने खुशी में हुसैन को गले लगा लिया था..

सुकून था उसे कि, उसकी बिटिया को इन्सपेक्टर हुसैन जैसे नेकदिल इन्सान का साथ मिल चुका था ।

☆ नेवला 2 — समाप्त